सम्पादक
डॉ. हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु. गुफ़रान नदवी
मु. हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
: 0522–2741221
E-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु0 12/-
वार्षिक	रु0 120/-
विशेष वार्षिक	रु0 500/-
विदेश में (वार्षिक)	30 यू.एस. डॉलर

चेक / ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ, 226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

Vision Computers- 9838644687

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

जनवरी, 2010 वर्ष 08 अंक 11

नया साल मुबारक हो

नया साल यारब मुबारक सभी को
न तकलीफ़ दे इस में कोई किसी को

ये हिन्दू ये मुस्लिम, ये सिख और मसीही
ये आदम की औलाद समझें सभी को

जो दादा हैं इक तो हुए भाई–भाई
तो भाई के जज़्बे से देखें सभी को

ये उम्मत नबी की क्यों बिखरी है आख़िर
तू शीरो शकर कर दे यारब सभी को

है कुर्आन एक और हदीसें वही हैं
नहीं ज़ेब देता झगड़ना किसी को

अगर फ़र्क़ आया है तहक़ीक़ में कुछ
तो हर इक मुहक़्क़िक़ दे मौक़अ् हर इक को

कहा रब ने मोमिन हैं आपस में भाई
मिला दें अगर लड़ते देखें किसी को

(इदारा)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

मुस्लिम अवाम और इस्लाम	डा0 हारून रशीद सिद्दीकी	3
कुर्आन की शिक्षा	मौ0 मु0 मंजूर नोमानी	5
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	7
कारवाने ज़िन्दगी	मौ0 सैय्यद अबुल हसन अली हसनी	10
जग नायक	मौ0 (स0) म0 राबे हसनी	13
महब्बत मुझे उन जवानों से है	इदारा	15
दीनी मदरसों के पाठ्यक्रम में	सैयद हामिद	20
हम कैसे पढ़ायें	डॉ. सलामत उल्लाह	22
बे पर्दगी और हमारा समाज	अताउल्लाह सिद्दीकी	25
आप के प्रश्नों के उत्तर	मुफ्ती मो0 ज़फर आलम नदवी	27
दिमाग़ी वरजिश	इदारा	29
सत्य घोषणा (पद्य)	डॉ हारून रशीद सिद्दीकी	30
आबे ज़मज़म	इदारा	31
सैलानी की डायरी	मो0 हसन अंसारी	33
भारत का संक्षिप्त इतिहास	इदारा	34
स्वतंत्रता संग्राम में	मौ0 अब्दुल वकील नदवी	37
हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण	इदारा	39
अतंर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

मुस्लिम अवाम और इस्लाम

डॉ० हारून रशीद सिद्दीकी

हमारे मुल्क में मुस्लिम अवाम का इस्लाम से जो तअल्लुक़ है वह फिक्रमन्द मुसलिहीन (चिन्तित सुधारकों) को ख़ून के आँसू रुलाने वाला है। पैदाइश से वफ़ात तक कहीं तो इस्लाम का लिहाज़ होता। बात मुस्लिम अवाम की है वरना ख़वास में तो यह ज़मीन औलियाउल्लाह से हमेशा मुज़य्यन रहती है।

चाहिये था कि मुसलमान घर में कोई भी बे नमाज़ी न हो अगर कोई सुसती करे तो घर के सभी लोग उस से नमाज़ पढ़वा कर छोड़ें, लेकिन जब पूरा घर बे नमाज़ी हो तो अब क्या हो? तबलीग़ी जमाअत के लोग आएं गे, एक एक की दाढ़ी में हाथ लगाएं गे मस्जिद में बुलाएं गे अगर मस्जिद जाने की तौफ़ीक़ मिल गई तो वहाँ हमारे भाई अपने साथ निकलने की इस तरह दअवत देंगे कि आप का इरादा हो ही जाए। अब अगर आप को उन के साथ निकलने की तौफीक़ मिल गई तो निकलने वाला पक्का नमाज़ी हो जाए गा, दाढ़ी भी रख लेगा दूसरे अख़लाक़ भी सुधर जाएं गे, घर वालों को भी मुतअस्सिर करे गा, लेकिन फिर मैं दअवत दूंगा कि जमाअत में निकलने वाले ऐसे दस घरों की दीनदारी पर नज़र डालें तो आप को दस में पाँच घर ऐसे मिलें गे जिन के घर वाले दीन से दूर ही हैं अलबत्ता उस निकलने वाले की बरकत से दीन से मानूस ज़रूर हैं और उम्मिद है कि आज नहीं तो कल वह दीन अपना लेंगे।

यह भी देखा गया है कि जमाअत में निकलने वाले के अज़ीज़ व अक़ारिब ने कभी उस को पल्टा लिया है। आखों देखी कहता हूँ जमाअत आई गश्त हुआ दो भाई मस्जिद आ गये बात सुन कर बहुत मुतअस्सिर हुए, वक्त लगाया, चिल्ला नहीं सिर्फ़ तीन रोज़ की जमाअत में निकले दाढ़ी रोज़े अव्वल से छोड़ दी, बे नमाज़ी थे नमाज़ पढ़ने लगे, भरा पुरा ख़ान्दान है घर वाले भी ख़ुश थे मगर सुसराल बरेलवी थी, यह हाल सुन कर दो साले आ धमके, बहन और भाँजों को डान्ट पिलाई, एलान करवा दिया कि जमाअत न छोड़ो गे तो घर में दाख़िल नहीं हो सकते, अन पढ़ थे, जमाअत से बाज़ आए चन्द दिनों में दाढ़ी मुन्ड गई, नमाज़ छुट गई, सुसराल वाले ख़ुश हो गये, ख़ुदा की पनाह, दूसरे भाई के साथ यह मुआमला तो न हुआ, उन की दाढ़ी अब तक बाक़ी है, नमाज़ भी पढ़ते हैं जमाअत को बुरा तो नहीं कहते मगर जमाअत से दूर ही रहते हैं, पहले भाई ने कभी जमाअत के ख़िलाफ़ कुछ न कहा यही कहा कि मुझे उन में कोई ख़राब बात नज़र न आई, लेकिन दाढ़ी रख कर मुंडा देना, नमाज़ छोड़ देना कोई कम महरूमी की बात न थी। मैं नहीं कहता कि अल्लाह ने उन की पकड़ कर ली कि बे देनी की अस्ल सज़ा तो आख़िरत में मिलेगी यहाँ ढील भी दी जा सकती है मगर उन को अचानक ऐसा मरज़ लगा कि लाखों ख़र्च हुआ पूरा घर परेशान रहा मैं ने देखा उनको जैसे अपनी तकलीफ़ लग ही न रही थी लेकिन घर वाले बहुत ही परेशान रहे यहाँ तक कि एक दिन जुदाई हो गई सब हाथ मल कर रह गये अल्लाह उन को हिदायत दे।

कभी तो ऐसा होता है कि जमाअती भाइयों की बात ही नहीं सुनी जाती और जब हमारा भाई कहता है कि महल्ले का महल्ला नामज़ नहीं पढ़ता आप को कैसा लगता है? क्या कुछ फ़िक्र करने की ज़रूरत नहीं है? जवाब मिलता है हमारी जमाअत यह काम कर रही है, हरी पगड़ी वाले नमाज़ की दअवत दे रहे हैं और नमाज़ी बना रहे हैं।

मेरे अकसर रिश्तेदार बरेलवी मसलक पर हैं, इस लिये मैं उन्हें बहुत क़रीब से जानता हूँ। उन

की बरेलवीयत बस यह है :– बरेली फतवे की परवाह किये बिना धूम धाम से तअ़ज़िया रखना, ईद, बकरअ़ीद, मुहर्रम बारा रबीउ़ल अव्वल, ग्यारा रबीउ़स्सानी, 22 रजब, 15 शाबान तिहवारों की तरह मनाना इन में मौलवीयों या मुअज़्ज़िनों या महल्ले के सिर्फ़ मर्दो के ज़रीअ़े फ़ातिहा ख़्वानी करना (औरतों को फ़ातिहा पढ़ने से महरूम रखना) कबरों पर मेला लगाना उ़र्स करना, मीलाद करना और बस, घर ख़ान्दान नहीं महल्ले का महल्ला नमाज़ नहीं पढ़ता इल्ला माशा अल्ला, मज़कूरा बरेलवी कार गुज़ारियाँ अंजाम देने वाले बड़े–बड़े मुनकरात करें मजाल है उन की बरेलवीयत पर हर्फ़ आए। शर्त यह है कि वहाबियों को काफ़िर कहते रहें। एक साहिब ने ख़ूबसूरत साली से निकाह़ पढ़ा लिया पहली को तलाक़ दे दी उन के एक आ़लिम ने पीठ पर हाथ फेरते हुए फ़रमाया, बेटे सुन्नी रहना। यह मसअला नहीं बताया कि पहली बीवी जो दूसरी की सगी बहन है, तलाक़ पाकर जब तक इद्दत न पूरी कर ले दूसरी बीवी जो पहली की बहन है से निकाह़ नही हो सकता।

जहाँ तक हरी पगड़ी वालों का तअ़ल्लुक़ है उन का काम सिर्फ़ क़सबात और शहरों में है, नाम तो उन की तन्ज़ीम का तह़रीकुस्सलात है मगर ख़ुद उन के घर में तारिके नमाज़ नज़र आएं गे, जैसा कि ऊपर आ चुका कि यह ऐब बअ़ज़ हमारे मुबल्लिग़ीन के यहाँ भी पाया जाता है। फिर हरी पगड़ी वाले नमाज़ क़ाइम करने की दअ़वत ज़रूर देते हैं लेकिन उन का अस्ल काम रददे वहाबीयत है। इस सिलसिले में कहा जा सकता है कि उन का काम क़ाइम नमाज़ से अपने आदमीयो को अलग करना है। यहाँ तक कि मस्जिदे नबवी और ह़रमे मक्की में भी अपने आदमीयों को वहाँ के इमामों के पीछे नमाज़ पढ़ने से रोक देना है। जब कि उन का अ़क़ीदा है और सह़ीह़ है कि ह़दीस के मुवाफ़िक़ है कि "मदीना तय्यिबा अपने अन्दर से (मदीने से) बुरे लोगों को ऐसे निकाल फेंकता है जैसे लुहार की भट्टी लोहे के मैल को।" साथ ही इन का अ़क़ीदा है कि निज़ामे आ़लम ह़ुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम चला रहे हैं, अल्लाह तआ़ला जो कुछ करते हैं वह अपने ह़बीब की मर्ज़ी के मुताबिक़ करते है (ह़ालांकि ख़ुद ह़ुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उम्मत को यह सबक़ नहीं पढ़ाया) अपने अ़क़ीदे के मुताबिक़ यह नहीं समझते कि अगर सऊ़दी सरबराहान इस्लाम से ख़ारिज होते तो ह़रमैन शरीफ़ैन की ख़िदमात इन से ले ली जातीं बल्कि यहाँ तो उस का उलटा है उन की ख़िदमात में ह़ैरत अंगेज़ इज़ाफ़ा है।

देवबन्दी बरेलवी इख़्तिलाफ़ात के सबब मुसलिम अ़वाम के सुधार में ज़बर दस्त रुकावटें हैं। बड़े ह़ैरत की बात है। अल्लाह पर ईमान में मुत्तफ़िक़, रसूल पर ईमान में मुत्तफ़िक़, क़ियामत और आख़िरत पर ईमान में इत्तिफ़ाक़, क़ुर्आन पर ईमान में इत्तिफ़ाक़, इस पर भी मुत्तफ़िक कि किसी नबी की अदना तौहीन कुफ़्र है, बस झगड़ा इस में है कि फ़ुलाँ इ़बारत से नबी की तौहीन होती है, दूसरा कहता है कि इस इ़बारत से तौहीन हरगिज़ नहीं निकलती। यह सूरते ह़ाल बड़ी नाज़ुक है। बरेलवीयत ने तो कभी ग़लतफ़हमियाँ दूर करने को सोचा भी नहीं। मैं तो दअ़वे के साथ कहता हूँ, कि अगर सिर्फ़ मुझे शिकस्त देना मक़सूद न हो इत्तिह़ाद बैनल मुस्लिमीन की फ़िक्र हो तो, आ़लिम, मौलवी, दरवेश जिस का जी चाहे बाहमी इख़्तिलाफ़ात दूर करने और इत्तिह़ाद व इत्तिफ़ाक़ पैदा करने पर गुफ़्तगू फ़रमाएं इन्शाअल्लाह उम्मीद यही है कि इत्तिह़ाद की राहें खुलें गी।

इख़्तिलाफ़ात दूर करने के लिये सह़ाब -ए–किराम फिर मुत्तफ़क़ अ़लैहि अस्लाफ़ को मिअ़यार बनाएं, रूहुल मआ़नी, इब्नि कसीर जैसी तफ़सीरें देखें, जस्सास की अह़कामुल क़ुर्आन को सामने रखें ग़रज़ कि अ़क़ाइद, तफ़सीर, ह़दीस, फ़िक्ह सब में ढाई तीन सौ साल पहले की मुत्तफ़क़ अ़लैहि किताबों को मिअ़यार बना कर इत्तिह़ाद की शकलें तलाश करें इनशाअल्लाह राहें खुलें गी।

❑❑

कुरआन की शिक्षा

मौलाना मु० मंजूर नोमानी

तर्जमा : और तुम्हारे मालिक का हुक्म है कि उस के सिवा किसी की इबादत और बन्दगी न करो। और (इस तौहिदे–खालिस के हुक्म के बाद दूसरा हुक्म उस का यह है कि) अपने माँ–बाप के साथ अच्छा सुलूक (बर्ताव) करो। अगर उन में से कोई एक या दोनों, तुम्हारे होते हुये बुढ़ापे की उम्र को पहुंच जायें (और उन का बोझ तुम को उठाना पड़े) तो भी उन की शान में कोई नामुनासिब और उनको नाखुश करने वला कलिमा न कहो, बल्कि उनसे अदब व एहतराम वाली बात ही कहो, और दर्दमंदी से उन के सामने आजिज़ी के साथ नीचे बने रहो, और उन के लिये अल्लाह से दुआ भी करते रहो कि ऐ पर्वर्दगार मेरे इन माँ–बाप पर रहम फर्मा (उन को दुनिया व आखिरत में राहत और आफियत दे) जैसा कि उन्हों ने मुझे बचपने की हालत में पाला (और मेरी राहत व आफियत की फिक्र की)। तुम्हारा रब तुम्हारे दिलों की बात को खूब जानता है। पस अगर तुम होगे लाइक और सआदत मंद (यानी दिल से माँ–बाप की खिदमत और उन के अदब व एहतराम का इरादा रखने वाले, लेकिन इस के बावजूद तुम से उन के अदब और हुस्ने सुलूक के बारे में अगर कोई कुसूर हो गया और तुम ने इस के बाद तौबा तलाफी की) तो तुम्हारा पर्वर्दगार तौबा करमे वालों को बख़्श देने वाला है और (माँ–बाप के अलावा भी) अपने सब रिश्तेदारों का हक अदा करो, और (रिश्तेदारी के दाइरे से बाहर भी) हाजतमंदों और (सहायता के पात्र) मुसाफिरों को भी देते रहो। और (अल्लाह के दिये माल को) बेजा न उड़ओ। बेजा उड़ाने वाले लोग शैतानों के भाई–बंद हैं, और शैतान अपने पर्वर्दगार का बड़ा नाशुकरा है (इस लिये तुम ऐसे न बनो) और अगर (कभी ऐसी अवस्था हो कि तुम्हारा हाथ खाली हो और उन की खिदमत से मजबुरी हो और इस की वजह से) तुम्हें उन से मुंह फेरना पड़े और अल्लाह के रहम और उस की रहमत की तुम्हें उम्मीद हो तो (माजिरत के तौर पर) उन से नर्म और खुशगवार बात कह दो, ऐसी बात उस वक्त भी न कहो जिस से उन का दिल दुखे और न तो ऐसा करो कि अपना हाथ (बल्किुल) अपनी गर्दन से बाँध लो (कि किसी को कुछ देने के लिये हाथ बढ़ ही न सके, जो कंजूसों का तरीका है)। और न ऐसा करो कि (अन्जाम से बे पर्वाह बेकार उड़ाने वालों की तरह) अपना हाथ बिलकुल खोल ही दो, और फिर उसका नतीजा यह हो कि तुम बैठ जाओ बिलकुल दरमाँदा (असहाय–निराश) हो कर, जिस को हर तरफ से मलामत की जाये (बहरेहाल इफरात व तफरीत से बचो और एतिदाल व मियाना रवी को अपना उसूल व दस्तूर बनाओ) तुम्हारा पर्वर्दगार जिस के लिये चाहता है रोजी में वुसअत देता है, और जिस के लिये चाहता है तंगी करता है। वह अपने सब बन्दों की खबर रखने वाला और सब का पूरी तरह देखने वाला है। (रिज़्क की चाबियाँ तुम्हारे या किसी दूसरी मखलूक के हाथ में नहीं हैं, बल्कि उस के हाथ में हैं, वही सब की रोजी का कफील है) और तुम पैदा होने वाले अपने बच्चों को इफलास व नादारी के डर से हलाक न कर डालो, हम उन को भी रोजी देंगे और तुम को भी (अगर तुम समझते हो कि रोजी का मस्अला तुम्हारे हाथ में है, तो तुम्हारा यह खियाल बहुत जाहिलाना और बिल्कुल काफिराना है, बहरेहाल इफलास व तंगी के खतेर से) अपने बच्चों को हलाक कर डालना बहुत ही बड़ा गुनाह है। और देखो जिना (बलात्कार) के करीब भी न जाओ, वह बड़ी बेहयायी की और गंदी बात है और बुरी राह है और मत कत्ल करो किसी ऐसी जान को (जिस का मारना) अल्लाह ने हराम

किया है, मगर हक की वजह से (जैसे किसास में या किसी और ऐसे संगीन (गंभीर) जुर्म की सजा में जिस की सजा–अल्लाह तआला की तरफ से कत्ल ही मुकर्रर है) और जो कोई नाहक मार डाला जाये तो हमने उस के वारिस को (किसास में कातिल की जान लेने का) हक दिया है। पस उस के कत्ल के बारे में शरअी–हद (धार्मिक–सीमा) से आगे नहीं बढ़ना चाहिये। बेशक वह हमदर्दी और मदद का मुस्तहक है (लेकिन उस को इस की इजाजत हरगिज नहीं है कि वे जोशे–इन्तिक़ाम में किसास की मुकर्रर हद से आगे बढ़ें) और यतीमों के माल के पास भी न जाओ (और उन के माल को हाथ भी न लगाओ) इल्ला यह कि (उन के फाइदे के लिये उन के माल में कोई तसर्रुफ (इस्तेमाल करना) जरूरी हो जाय तो) अच्छे तरीके से (कर सकते हो, और वह भी सिर्फ) उस वक्त तक कि यतीम अपनी प्रोढ़ अवस्था को पहुंच जाये। और अपने अह्द (वादे) पूरे करो, अह्द की जरूर पूछ–पाछ होगी। और जब किसी को तुम कोई चीज नाप कर दो, तो पूरा नापो और (जब कोई चीज तौल कर किसी को देनी हो, तो) ठीक तराजू से तोलो। (लेन–देन में धोके और फरेब की कोई बात न हो) यही तुम्हारे लिये बेहतर है और इस का अन्जाम जियादा अच्छा है और जिस बात का तुम्हें सही–सही इल्म न हो उस पर न चलो (यानी वहम वाली और बे तहक़ीक़ बातों की पैरवी न करो और उन्हें अपने कामों की बुन्याद न बनाओ, अल्लाह तआला ने इल्म व तहक़ीक के जो जरीऐ सब इन्सानों को दिये हैं, यानी) कान और आँखें और दिल यकीनन् (क़ियामत के दिन) इन सब के बारे में पूछा जायेगा (कि तुम ने हक को पहचानने के रास्ते में इन से कितना काम लिया) और जमीन पर (मुतकब्बिरों की तरह) इतराते और अकड़ते न चलो (अपनी हकीकत को न भूलो, न तो तुम अपने क़दमों के जोर से) जमीन को चीर फाड़ सकते हो और न लम्बाई में पहाड़ों को पहुंच सकते हो यह सारे बुरे काम तुम्हारे मालिक को नापसन्द हैं। ऐ पैगम्बर! ये बातें इस दफ्तरे–हिक्मत में से हैं जो तुम्हारे रब ने तुम्हारी तरफ वही किया है। और (ऐ इन्सानो! आखिर में दोबारा ताकीद की जाती है कि) अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद न बनाओ (शिर्क वह गुनाहे–अजीम है कि अगर इस से तुम आलूदा–गंदे हुये) तो बस जहन्नम में झोंक दिये जाओगे, और फिर तुम पर (हर तरफ से) लानत व मलामत और धुतकार होगी।

(बनी इस्राईल : 23–39)

सुब्हानल्ला! कुरआने–मजीद का यह "खुतबा" अहकाम व हिदायात को किस कद्र जामे (व्याप्त) है। फिर तर्जे–बयान कितना मुअस्सिर व प्रभाव–शाली है। बिला शुबह अगर जौके–सलीम नसीब हो तो इस की हर आयत पढ़ कर दिल गवाही देगा कि बेशक यह मालिकुल् मुल्क और अह्कमुल हाकिमीन (यानी अल्लाह) ही का हिदायत–नामा है।

उम्मते–मुस्लिमा के ख़ास फ़राइज़ और उस का नस्बुल् ऐन (ध्येय)

सूरतुल् ह़ज्ज के आखिर में इर्शाद फ़र्माया गया है:

तर्जमाः ऐ वे लोगो! जिन्होंने दावते–ईमानी को क़बूल कर लिया (अब तुम्हारे फ़राइज़–कर्तव्य–और तुम्हारे करने के खास काम ये हैं कि अपने पर्वर्दगार के लिय) रूकूअ् व सुजूद करो, और (हर तरह से) अपने रब की इबादत व बन्दगी करो। और (उस की मख्लूक़ के साथ) भलाई करो, ताकि तुम फलाहयाब और बा मुराद हो जाओ! और अल्लाह की राह में खूब कोशिश करो, और जान लड़ा दो, जैसा की उस की राह में कोशिश और जाँबाजी का हक है। उस ने (अपनी ख़ास बन्दगी और अपनी राह की जिद्दो–जह्द के लिये) तुम्हारा इन्तेखाब (चुनाव किया है, और दीन में तुम्हारे लिये उस ने कोई तंगी नहीं रखी है। (बल्कि बड़ी वुस्अत और कुशादगी वाला यह दीन है, जो हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जरीअे तुम को अता किया गया है) वही तरीका तुम्हारे बाप इब्राहीम (अ) का।

शेष पृष्ठ 9

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तसनीम

हज़रत अिम्रान (र0) बिन हुसैन से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हया सिवाये खूबी के कुछ नहीं लाती। (बुख़ारी–मुस्लिम) एक रिवायत में है कि हया सरासर खैर है।

हज़रत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ईमान की कुछ ऊपर सत्तर शाखें हैं। उनमें सबसे बड़ा दर्जा लाइलाह इल्लल्लाहु कहने का है। और अदना काम रास्ते से तकलीफ की चीज को हटा देना है। और हया ईमान की एक शाख है। (बुख़ारी–मुस्लिम)

रसूलुल्लाह (स0) की हयादारी

हज़रत अबू सअीद (र0) खुदरी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में पर्दानशीन लड़कियों से जियादः शर्म थी जब कोई बात आपको नापसन्द होती थी तो हम आपके तेवर से पहचान लेते थे। (बुख़ारी–मुस्लिम)

इफ़शाए राज़

हज़रत अबू सअीद (र0) खुदरी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कियामत में अल्लाह के यहाँ बदतरीन दर्जा उस आदमी का होगा जो औरत के साथ और औरत उसके साथ बाहम बेतकल्लुक हों, फिर वह मर्द उसका राज फैलाये।

राजदारी की एक मिसाल

हज़रत अब्दुल्लाह (र0) बिन उमर (र0) से रिवायत है कि हज़रत उमर (र0) ने फ़रमाया, जब हफसः (र0) बेवा हुईं तो मैं उस्मान (र0) से मिला और कहा कि अगर तुम चाहो तो हफसः (र0) का निकाह तुम्हारे साथ कर दूँ। उन्होंने कहा, मैं इस मुआमले पर गौर करूंगा। मैं कई रातें इन्तिजार करता रहा। फिर वह मुझसे मिले और फ़रमाया, मेरा खयाल है कि अभी शादी न करूं। फिर मैं अबूबक्र (र0) से मिला और अर्ज़ किया अगर आप चाहें तो आपका निकाह हुफसः (र0) से कर दूँ। उन्होंने भी कोई जवाब न दिया। मेरे दिल में उसमान (र0) से जियादः उनसे शिकायत आयी। इसमें कई दिन गुजर गयें। फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हफसः (र0) को पैगाम भेजा। मैंने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उनका निकाह कर दिया। एक दिन अबूबक्र (र0) मुझसे मिले और बोले तुमने हफसः (र0) का निकाह मुझसे करना चाहा था, मैंने जवाब नहीं दिया था। तुम्हें शायद रंज हुआ हो। मैंने कहा, हाँ। फ़रमाया, बात यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का खुद ऐसा खयाल था। और यह आपका राज था जिसको मैंने इफशा करना न चाहा। मेरी खामोशी की यह वजह थी। अगर हुजूर इरादा तर्क फ़रमा देते तो मैं कुबूल कर लेता। (बुख़ारी)

हज़रत फातिमा (र0) की राजदारी

हज़रत आयशः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीवियाँ आपके पास बैठी थीं। इतने में हज़रत फातिमः (र0) आयीं। उनकी चाल बिल्कुल आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिलती थी। जब आपने उनको देखा तो खुशआमदेद कहा और फ़रमाया, मेरी बेटी, अच्छा हुआ तुम आ गयीं। फिर अपने दायें या बायें तरफ बिठा लिया और चुपके से एक बात कही तो वह रोने लगीं, और बहुत रोयीं। जब आपने उनकी घबराहट देखी तो फिर चुपके से एक बात कह दी तो वह हंस दीं। मैंने फातिमः (र0) से कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बीवियों के होते हुए भेद जाहिर करने में तुमको मख्सूस किया और फिर तुम रोती हो। फिर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाहर तशरीफ ले गये तो मैंने कहा, तुमसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क्या

फ़रमाया? हज़रत फातिमः (र0) ने कहा, भला मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का भेद जाहिर कर सकती हूँ? जब आपकी वफात हो गयी तो मैंने उनको अपने हक का वास्ता दिलाते हुए कसम दिलायी कि जो कुछ तुमसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था, बतलाओ। हज़रत फातिमः (र0) ने कहा हाँ अब बतलाऊँगी। बात यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहली मर्तबा चुपके से जो बात कही थी वह यह थी कि जिब्रील (अ0) हर साल एक मर्तबा कुर्आन शरीफ दुहराते थे और इस साल दो मर्तबा दुहराया, इससे मैं समझता हूँ कि मेरी वफात करीब है। पस तुम अल्लाह से डरो और सब्र करो। मैं तुम्हारे लिए अच्छा पेशरौ हूँ। यह सुनकर मैं रोने लगी। जब आपने मेरी घबराहट देखी तो दूसरी बात चुपके से यह कही कि क्या तुम राजी हो कि इस उम्मत की औरतों की सरदार बनो, तो मैं हँस दी। (बुख़ारी–मुस्लिम)

हज़रत अनस (र0) की राजदारी

हज़रत साबित (र0) से रिवायत है कि हज़रत अनस (र0) ने मुझसे फ़रमाया कि हम लड़कों के साथ खेल रहे थे। इतने में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ लाये और हमें सलाम किया। फिर अपनी किसी हाजत के लिए आपने मुझे भेजा। मुझे उस काम के करने में देर लगी। जब मैं अपनी माँ की तरफ पलटा तो उन्होंने देर होने की वजह पूछी। मैंने कहा मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किसी जरूरत से भेजा था। बोलीं, क्या जरूरत थी। मैंने कहा वह राज़ है। मेरी माँ ने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के राज की खबर किसी को न देना। फिर हज़रत अनस (र0) ने मुझसे फ़रमाया, साबित (र0) अगर मैं यह राज किसी से बताना चाहता तो तुमको बताता। (मुस्लिम)

ईफा–ए–अहद और वादे का पास

और अहद को पूरा करो, बेशक अहद की बाज़ पुर्स होगी।

(सू0 बनी इस्रार्लल रु0 4 आ0 34)

और तुम अल्लाह के अहद को पूरा कर लो जब कि तुम उसको अपने जिम्मे कर लो।

(सू0 नहलि रु0 13 आ0 91)

या "अय्युहल्लजीन आमनू" औफू बिल्अुकूदि....

ऐ ईमान वालो! अहदों को पूरा करो। (सू0 माअिदः, रु0 1 आ0 1)

या "अय्युहल्लजीन आमनू लिम तकूलून मा ला तफ्अलून कबुर मक्तन अिन्दल्लाहि अन् तकूलू मा ला तफ्अलून

ऐ ईमान वालो! ऐसी बातें क्यों कहते हो जो करते नहीं हो। खुदा के नजदीक यह बहुत नाराजी की बात है कि ऐसी बात कहो जो करो नहीं।

(सू0 सफ्फि, रु0 1 आ0 2–3)

वादा खिलाफी मुनाफिक की निशानी है

हज़रत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मुनाफ़िक़ की तीन निशानियाँ हैं। जब बात कहे झूठ कहे। वादा करे तो उसके खिलाफ करे। अमान्त रखाई जाये तो खियानत करे।

और मुस्लिम की एक रिवायत में है कि अगरचिः वह रोज़े भी रखता हो, और नमाज़ भी पढ़ता हो और अपने को मुसलमान भी समझता हो।

हज़रत अब्दुल्लाह (र0) बिन अम्र (र0) बिन अलआस से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिसमें चार खसलतें हों वह खालिस मुनाफिक़ है। और जिसमें इनमें की एक खसलत होगी तो वह भी मुनाफिक ही की ख़सलत है, जब तक उसको छोड़ न दे। अलामतें यह हैं। जब बात कहे झूठ कहें, वादा करे वफ़ा न करे, अमानत में ख़ियानत करे, और जब लड़े तो गाली दे। (बुख़ारी–मुस्लिम)

हज़रत अबू बक्र (र0) का रसूलुल्लाह (स0) के वादे को पूरा करना

हज़रत ज़ाबिर (र0) से रिवायत है कि मुझसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वादा फ़रमाया कि अगर बहरैन का माल आया (दोनों हाथों को मिला के फ़रमाया) इस तरह, इस तरह और इस तरह दूँगा। लेकिन बहरैन का माल आने से पहले हुजूर की वफात हो गयी।

जब बहरैन का माल आया तो हज़रत अबू बक्र (र0) ने हुक्म दिया और मुनादी करायी कि जिसका रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ से कोई वादा क़र्ज़ हो वह मेरे पास आये। तो मैं उनके पास गया और अर्ज़ किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे इस तरह इरशाद फ़रमाया था तो हज़रत अबू बक्र (र0) ने एक मुट्ठी भर कर मुझको दिया। मैंने गिना तो पूरे पाँच सौ थे। फिर उन्होंने मुझसे कहा कि दो मुट्ठी और लो। (बुख़ारी–मुस्लिम)

अच्छी आदत और मामूल की पाबन्दी

...अिन्नल्लाह ला युग़य्यिरु मा बिकौमिन् हत्ता युग़य्यिरू मा बिअन्फुसिहिम्...

वाक़िअी अल्लाह तआला किसी कौम की (अच्छी) हालत में तगय्युर नहीं करता जब तक वह खुद अपनी हालत को न बदल दें।

(सू0 रअद, रु0 : 2 आ0 11)

व ला तकूनू कल्लती नक़ज़त् ग़ज़्लहा मिम्बदि कुव्वतिन् अन्कासन्...

और तुम उस औरत की तरह न हो जिसने अपना ऊन काते पीछे तार–तार करके नोच डाला।

(सू0 नहलि, रु0 13 आ0 92)

...व ला यकूनू कल्लजीन अूतुल्किताब मिन् क़ब्लु फ़ताल अ़लैहिमुल्–अमदु फ़क़सत् कुलूबुहुम्...

और उन लोगों की तरह न हो जाएं जिनको इनके कब्ल किताब मिली थी। जब जमाना दराज हो गया और (तोबा न की) फिर उनके दिल खूब ही सख्त हो गये।

(सू0 हदीदि, रु0 2 आ0 16)

...फमा रअौहा हक़्क़ रिआयतिहा...

सो उन्होंने उस (रुहबानियत) की पूरी–पूरी रिआयत न की।

(सू0 हदीद, रु0 4 आ0 27)

रात की अिबादत को कुछ दिन करके छोड़ देना बुरा है

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (र0) बिन अलआ़स से रिवायत है कि मुझसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ अब्दुल्लाह (र0)! तुम उस शख्स की मानिन्द न होना कि रात को अिबादत करता था फिर कुछ दिनों बाद छोड़ दिया।

(बुख़ारी–मुस्लिम)

गुफ्तुगू, वाज़ व नसीहत के आदाब

...वख़िफ़ज़् जनाहक लिल्मुअ़मिनीन।

और मुसलमानों पर शफ़क़त रखो। (सू0 हिजरि, रु0 6 आ0 88)

...व लौ कुन्त फ़ज्जन् ग़लीजल्क़ल्बि लन्फज़्ज़ू मिन् हौलिक...

अगर तुम तुन्द–खू और सख़्त–तबीअत होते तो यह सब तुम्हारे पास से मुन्तशिर हो जाते। (सू0 आल अिमरान, रु0 17 आ0 159)

कलमए खैर ही दोजख़ से हिजाब बन सकता है

हज़रत अ़दी (र0) बिन हातिम से रिवायत है कि फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने, आग से बचो। अगरचिः एक ख़जूर का टुकड़ा ही देकर। अगर वह भी मैस्सर न हो तो अच्छी बात ही कहो।

(बुख़ारी–मुस्लिम)

❑❑

कुरआन की शिक्षा

उस ने तुम्हारा नाम रखा "मुस्लिमीन" पहले भी और इस (आख़री किताब कुरआन) में भी ताकि रसूल बताने वालो हो तुम को और तुम बताने वाले हो (दुनिया को) और सब लोगों को। पस ऐ अहले–ईमान! (इन जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिये) तुम नमाज काइम करो और जकात अदा करो और अल्लाह तआला की रस्सी को मजबूती से थाम लो (और उस की कारसाजी और मददगारी पर भरोसा करके जिद्दोजहद के मैदान में कूद पड़ो) वह तुम्हारा वाली और कारसाज है और कैसा अच्छा मददगार है।

(अलहज्ज : 77–78)

सुब्हानल्लाह! छोटी–छोटी इन दो–तीन आयतों में उम्मते–मुस्लिमा के नसबुल–अैन, उस के मक्सदे–वजूद, उस के मंसब (पद) और उसके फराइज को कैसी जामियत (व्यापकता) के साथ बयान फर्माया गया है कि सिर्फ ये आयतें भी उम्मत की उसूल रहनुमाई के लिये बिल्कुल काफी हैं।

अल्लाह तआला हम मुसलमानों को तौफीक़ दे कि कुरआने–मजीद के इस तरह के इर्शादात की रौशनी में अपने मक्सद व नसबुल–अैन और अपने मन्सबी फराइज (पद–कर्तव्य) को समझें, और अपनी जिन्दगी को इन हिदायात के मुताबिक बना के अल्लाह तआला की रिजा व रहमत के मुस्तहक हों। यही इन्सानों की हकीकी मेराज है।

❑❑

किस्त : 21

कारवाने ज़िन्दगी

आत्म कथा

मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी

देवबन्द का ठहराव

सन् 1932 ई0 में मौलाना मदनी रह0 के किसी आगमन के अवसर पर भाई साहब ने (जिन को मेरी शिक्षा–दीक्षा का बड़ा ध्यान रहता था) मुझे मौलाना मदनी की सेवा में ख़ास तौर पर पेश किया। मैंने कुछ अपने हालात बताये। मौलाना ने भाई साहब को सलाह दी कि मुझे उन के पास देवबन्द भेज दिया जाये। शिक्षा सत्र जो तमाम अरबी मदरसों में शव्वाल से शुरू होता है, आधे से अधिक हो चुका था, और मेरे बारे में मौलाना का मँशा बाक़ायदा तालिब इल्म (विद्यार्थी) बनने का था भी नहीं, सिर्फ़ कुछ दिन साथ रहने का था। मैं चाँद के तीसरे या चौथे महीने में (जूलाई–अगस्त 1932 ई0 1351 हि0) देवबन्द हाजिर हुआ। मौलाना ने अपने ही पास ठहराया। उस समय पढ़ाई जोरो पर थी। मौलाना के यहाँ बुख़ारी और तिर्मिज़ी पढ़ाई जाती थी, मैंने उस में बाकायदः सम्मिलित होना शुरू कर दिया। भाई साहब के संज्ञान में जब यह बात आई तो उन्हों ने मुझे निर्देश दिया कि अब जब मैं अधिक समय ठहर रहा हूँ तो अपने खाने का मेस में बाकायदा इन्तेजाम कर लूँ। मैंने मौलाना से इस की इजाजत ली तो किसी कदर नागवारी (अनमने दिल से) और मजबूरी के साथ इस की इजाजत दी, लेकिन फरमाया कि नाशता साथ ही हुआ करेगा। मैं मौलाना के घर से ट्रॉस्फर होकर दारूश्शफा के कमरे में ठहर गया, जो लगा हुआ ही था।

मौलाना ने जाते ही मुझे हज़रत मोलाना मुहम्मद कासिम साहब नानौतवी का एक रिसालः सम्भवतः "तकरीर–दिल–पज़ीर" पढ़ने को दी। और मोल्वी सैयद तुफैल अहमद साहब मंगलौरी की किताब "हुकूमत खुद इख्तियारी" पढ़ने को दिया हदीस की कलास के अलावा जिस से मौलाना की शिक्षण शक्ति और ज्ञान की गरिमा फूटी पड़ती थी, और पूरे माहौल पर नूरानियत (प्रकाशमान) और सकीनत (सुख) की छाया मालूम होती थी। मैंने मौलाना से कुरआन मजीद की कुछ मुश्किल आयतों के समझने के लिये विशेष समय माँगा। मौलाना ने मुझे जुमा–जुमा समय दिया, जिस में मौलाना के उस समय के सियासी दौरों की वजह से अक्सर नागे हो जाते थे। फिर भी ज्ञानार्जन का अवसर मिला, और मौलाना के कुरआन की दूरदर्शिता को समझने–समझाने की शाक्ति का अन्दाजा हुआ।

मौलाना का दस्तरख्वान उस समय भी सम्भवतः हिन्दुस्तान का यदि विशालतम दस्तरख्वान नहीं तो कुछ एक विशालतम दस्तरख्वानों में से था। और दुश्मन दोस्त सभी होते। विभिन्न सूबों से विद्वान और प्रतिष्ठित व्यक्ति कसरत से आते थे, जिन में अबुल मुहासिन मौलाना सज्जाद साहब बिहारी खास तौर पर उल्लेखनीय हैं जिन का कई–कई दिन ठहराव रहता था। दर्स (क्लास) की कैफियत यह थी, शिक्षा सत्र के अन्तिम महीनों में (टीचिंग टाइम के अलावा) बाद अस्र भी दर्स, बाद इशा भी दर्स जो देर रात तक जारी रहता, बाद फ़ज्र भी दर्स, इस दर्स के साथियों में मौलाना मेराजुल हसन साहब और मौलाना सैयद सिबग़तउल्ला साहब बख़्तियारी से ख़ास लगाव पैदा हो गया था। खाना अपने एक हम वतन हाजी मुहम्मद सईद साहब नसीराबादी के साथ होता था। तारीखी मालूमात के लिये लिखता हूँ कि उस समय खाने की फीस जिस में दोनों वक्त गोश्त होता था पाँच रूपये माहवार थी। इत्तेफ़ाक़ से मोल्वी हबीबउल्ला साहब पुत्र हज़रत मौलाना अहमद अली साहब लाहौरी भी उस समय दारूल उलूम के विद्यार्थी थे। मौलाना के तअल्लुक की वजह से उन से भी खास लगाव था।

दारूल उलूम के इस चार माह के ठहराव में मेरी दिलबस्तगी का

सामान और मेरी आस्था का केन्द्र मौलाना मदनी का व्यक्तित्व था और असल मुनासिबत उन्हीं से थी। मुझे याद है कि वह सुबह कभी अपने ख़ास लहजः में मुझ को सम्बोधित कर के कहते, "मोल्वी अली मियाँ साहब! आज अखबार में आप ने क्या पढ़ा?", तो मुझे दिन भर इस का मजा आता रहता और दिल में खुशी महसूस होती।

मैंने कई साल के बाद (जब मैं दारूल उलूम नदवतुल उल्मा में पढ़ाता था) देवबन्द से निकलने वाली एक अरबी पत्रिका में एक लेख लिखा था जिस में अपनी बात और आँखों देखा हाल लिखा था। यह लेख नदवा की अरबी मासिक पत्रिका "अल बअसुल इस्लामी" में भी प्रकाशित हुआ।

मेरे देवबन्द पहुंचने के बाद ही मौलाना मदनी ने मेरा मौलाना एजाज अली साहब से, जिन का व्यक्तित्व मौलाना के बाद दारुलउलूम में सब से प्रतिष्ठित था, विशेष परिचय करा दिया। उस जमाने में मौलाना के प्रयासों से मुल्ला अली कारी की मशहूर किताब "शरह नक़ायः" (जिस को मौलाना शरह वकायः पर प्राथमिकता देते थे) ताजः–ताजः प्रकाशित हुई थी और मौलाना ने छात्रों के एक विशेष ग्रुप को विशेष रूप से इस के पढ़ाने के लिये समय दिया था, स्नेहवश मुझे भी इस हल्कः में सम्मिलित कर लिया। और मुझे इस पढ़ाई से बहुत फायदः हुआ। मौलाना उस समय से मुझ पर बड़ी कृपा दृष्टि रखने लगे थे, और यह स्नेह अन्त तक बना रहा जब मेरी किताब "मुख्तारात'8 छप कर उन के पास पहुंची तो मजलिस में जो लोग मौजूद थे उन में कुछ से जो युवा लेखक के लिये सनद और शहादत का दर्जा रखते हैं, इस का परिचय और प्रशँसा की। मौलाना एक मिसाली उस्ताद थे जो स्टूडेन्ट्स पर स्नेह, अध्ययनशीलता, समय की पाबन्दी और सम्मान व गरिमा में प्राचीन विद्वानों और गुरूओं का लगभग आखिरी नमूना थे।

उसी जमाने में हज़रत मौलाना सैयद अनवर शाह कशमीरी एक मर्तबः डाभेल से देवबन्द पधारे और अपने निवास (मुहल्ला खाननकाह) पर ठहरे। भाई साहब का निर्देश था कि मैं उन की सेवा में उपस्थित हूँ, और उनका सलाम पहुंचाऊँ। मैंने सलाम पहुंचाया तो उन्होंने पहचान लिया और खैरियत व हालात दरयाफत किये। सम्भवतः दो तीन बार उन की अम्र की मजलिस में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

जब दारूलउलूम में इम्तेहान की तैयारी शुरू हुई और किताबें ख़त्म के करीब पहुंची तो मैं देवबन्द से वापस आ गया। देवबन्द ही से मैं ने इरादा कर लिया था कि लाहौर जा कर हज़रत मौलाना अहमद अली साहब से उनके दर्स तफसीर की (कुरान की व्याख्या की कलास) जो उस समय पूरे हिन्दुस्तान में अपने तर्ज़ का यकता व यगाना दर्स था, तकमील (पूरा करना) करूँगा।

लाहौर में हज़रत मौलाना अहमद अली साहब के दर्स की तकमील

1351 हिज्री के शाबान के अन्त या रमजान के शुरू में (सम्भवतः दिसम्बर 1932) मैं लाहौर के लिये तैयार हुआ। और लाहौर पहुंचकर मदरसा कासिमुल उलूम का विधिवत छात्र बन गया। इस कलास में पूरा कुरआन मजीद पढ़ाया जाता था। सिर्फ अरबी मदरसो के फ़ारिग़ या फाइनल कलास के छात्र शरीक होते थे। और यह उल्मा कलास कहलाती थी। शाबान के अन्त से शुरू होकर जीक़ादः के मध्य तक इस का सिलसिला (तीन माह) जारी रहता। मैं जब पहुंचा हूँ तो इस दर्जः में पचास के करीब छात्र थे ज़िन में अधिकाँश दारूल उलूम देवबन्द के फाजिल (स्नातक) थे। इस कलास में बड़ी मेहनत और पक्की स्मरण शक्ति की जरूरत थी। और नया पाठ शुरू होने से पहले पिछले पाठ का इम्तेहान होता था। और जिस की जिस रूकू की बारी आ जाये, उस को उस का खुलासा मौलाना सिन्धी के मुकर्रर किये हुए शब्दों में और उस का कुरआनी स्रोत सुनाना पड़ता था, मेरी स्मरण शक्ति खानदानी तौर पर कमजोर है, इस लिये मुझे बड़ी मेहनत पड़ी, फिर लाहौर की सर्दी और मेरी जिस्मानी कमजोरी, और होस्टल के बजाय घर के खाने और जिन्दगी

की आदत। लाहौर का ठहराव अच्छी खासी साधना थी, लेकिन अल्लाह ने मदद फरमाई। जीकादः 1351 हिज्री के शुरू (मार्च 1933) में इम्तेहान हुआ। मौलाना की दावत पर ख्वाजा अब्दुल हयी साहब फारूकी देहली से कापियाँ जाँचने के लिये आये। तकदीरी बात कि उन्होंने मुझे सब से ज्यादा नम्बर दिये जो सम्भवतः 70 या उस से कुछ ऊपर थे। सहपाठियों ने, जो सब मदरसों के फाजिल थे, एक एहतजाजी (विरोध प्रदर्शनात्मक) जल्सा किया जिस में परीक्षक पर नम्बर देने में ना इन्साफी का इल्जाम लगाया। इस पर हज़रत मौलाना अहमद अली साहब ने खुद कापियों को देखने का एलान किया। किस्मत की बात की जब उनहोंने कापियाँ देखीं तो सब परीक्षार्थियों के नम्बरों में थोड़ा–थोड़ा बढ़ा दिया, और मेरे नम्बर बढ़ा कर अट्ठानबे (98) कर दिये। 15 ज़ीकादः 1351 (12 मार्च 1933) को मदरसा क़ासिमुल उलूम में, जहाँ हम लोग ठहरे थे, और जो अंजुमन खुद्दामउद्दीन दरवाजा शेरां वाला लाहौर की देख रेख और सरपरस्ती में था, कनवोकेशन (दीक्षान्त समारोह) हुआ। मौलाना मदनी रह0 मौलाना की खास दावत पर तशरीफ लाये। और अपने कर कमलों से वह सनद (प्रमाण पत्र) प्रदान की जिसका अरबी लेख अल्लामा सैयद अनवर शाह कशमीरी का तरतीब दिया हुआ है। अन्त में खुद उन के, मौलाना मदनी के, और मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी, और हज़रत मौलाना अहमद अली साहब अमीर अंजुमन खुद्दामउद्दीन लाहौर के मुबारक दस्तख़त हैं।

लाहौर का दोबारा ठहराव

सम्भवतः अप्रैल 1934 में मौलाना के निर्देश पर मैं कुछ दिन उन की शिक्षा–दीक्षा और एकागचित हो कर संयम व साधना के लिये लाहौर गया। मेरी फूफी और मौलाना सैयद तल्हा साहब वहीं हीरामन्डी में रहते थे। गोया मेरा घर मौजूद था। लेकिन मौलाना ने निर्देश दिया कि मैं शाही मस्जिद के किसी हुज्रे में अलग रहूं। खाना भी घर से आ जाया करे। अध्ययन और ज्ञानार्जन से भी यथासम्भव बचूँ। सिर्फ हाजी अब्दुल वाहिद साहब को एक सबक पढ़ाने की इजाजत थी जो मौलाना ही से बैअत थे। बलोचिस्तान में एक अच्छे शैक्षिक पद पर थे, कुछ ही साल पहले बी0ए0 के इम्तेहान में वह पूरे पंजाब में फर्स्ट आये थे। उन की धार्मिक आस्था बहुत बुलन्द थी। वह जामिया अहजर मिस्र जाना चाहते थे। मौलाना ने उन्हें मेरे सुपुर्द कर दिया। मैं लाहौर लगभग तीन महीने रहा। वहाँ से जून के अन्त में जब लखनऊ आया तो मेरी ग्रीष्मावकाश के बाद नदवा में नियुक्ति हो गयी। और अगस्त 1934 से मैं ने काम शुरू कर दिया।

(जारी)

❑❑

बेपरदगी और हमारा समाज

उन्होने एक लम्हा भर के लिए यह भी नहीं सोचा कि कितनी बेहयायी, बेशर्मी और जिल्लत की जिन्दगी इख्तियार करने जा रही हैं। हकीकत में नकाब (पर्दा) बुनियादी तौर पर इबादत का एक अहम हिस्सा है हम उन लोगों के पीछे चलें जिन्होंने इस्लाम और उस के उसूलों को अपनाने में काफी दुशवारियों का सामना किया फिर इस्लाम उन के रग व रेशे में रच बस गया और उन्होंने सख्त आजमाइश के बावुजूद इस आरजी लज्जत वाली जिन्दगी को नहीं अपनाया।

नकाब न पहनने वाली औरतों को एक लम्हा ठहर कर जरूर सोचना चाहिए कि मुआशरे में जिनाकारी, बदकारी, बेहयायी, बेशर्मी क्यों अपने उरूज को पहुंच रही है क्यों इस में रोज बरोज इजाफा हो रहा है हमारी बहनों बेटियों को सोचना चाहिए कि परदा न करने और महफिलों की परी बनने की ख्वाहिश ने उन्हें कहाँ पुंचा दिया है और उन की इस ख्वाहिश को पूरा करने की वजह से इस दुनया में और इस्लामी मुआशरे में कितनी गिरावट पैदा हो गई है जिस के बुरे असरात खुद उन पर और उन की औलाद पर भी पड़ रहे हैं।

❑❑

किस्त : 12

जगनायक

मौलाना मुहम्मद राबे हसनी

मुबारक नसब

अनुवाद मु० गुफरान नदवी

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नसब (वंश) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बड़े बेटे से शुरू होता है अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को दूसरे पिछले नबीयों के मआमले में जियादा पसन्ददीदा (मनोनीत) नबी करार दिया इस सिलसिले में उनकी कुरबानियों को वह मुकाम अता फरमाया जो दूसरे नबीयों की कुरबानियों के मुकाबले में जियादा बाला व बरतर (सर्वश्रेष्ठ) थी। जिनकी बिना पर अल्लाह तआला ने उन्हें तमग़–ए–खलीली (मित्रता पदक) अता फरमाया, जिसका जिक्र कुरआन मजीद में फरमाया "वत्तख़ज़ल्लाहु इब्राहीम ख़लीला" (अन–निसा : 125) "और इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने अपना दोस्त बनालिया" और अल्लाह तआला अपनी इस पसन्द (अभिरूचि) को उनकी औलाद तक मुनतक़िल कर दिया जिस की दुआ खुद इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने की थी लेकिन अल्लाह तआला ने उनकी यह दुआ कुबूल करते हुवे यह भी फरमाया दिया कि यह चाहत और पसन्द सिर्फ उनकी उन्ही औलाद तक महदूद (सीमित) रहेगी। जो सही रास्ते (सत्य मार्ग) पर रहेंगे और अपने को इसका अहल (योग्य) बनाएगे, अल्लाह ने फरमाया।

"जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम को उनके रब ने कई–कई बातों से आजमाया और उन्होंने सबको पूरा कर दिया तो अल्लाह ने फरमाया कि मैं तुम्हें लोगों का इमाम (नायक) बना दूँगा, अर्ज़ (निवेदन) करने लगे और मेरी औलाद को, फरमाया मेरा वअदा जालिमो से नहीं" सूरह अल–बकरा : 124

सूरह इब्राहीम में अल्लाह ने फरमाया :

"और जब इब्राहीम ने अपने परवरदिगार से यह दुआ की कि ऐ! मेरे परवरदिगार इस शहर को अम्न वाला (शान्ति वाला) बना दे और मुझे और मेरी औलाद को बुतपरस्ती से पनाह दे ऐ मेरे पालने वाले मअबूद उन्होंने (बुतों ने) बहुत से लोगों को राह से भटका दिया है पस मेरी ताबेदारी करने वाला मेरा है और जो मेरी नाफरमानी (अवज्ञा) करे तो तू बहुत मआफ और करम करने वाला है, ऐ मेरे परवरदिगार! मैंने अपनी औलाद को इस बेखेती की वादी (घाटी) में तेरे हुरमत वाले (सम्मान वाले) घर के पास ला बसाया है, ऐ हमारे परवरदिगार (पालन कर्ता) यह इस लिये कि वह नमाज़ क़ाएम (स्थापित) रखें, तू लोगों के दिलों को ऐसा करदे कि उनकी ओर झुके रहें, और उनको मेवों से रोजी (आजीविका) दे ताकि तेरा शुक्र अदा करें" सूरह इब्राहीम : 35–37

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने रब (पालनहार) की रज़ा (प्रसन्नता) की चाहत में उसके प्रति कठिन आज्ञा का पालन पूरी निष्ठा के साथ किया और उसकी वजह से आपको आपके रब की ओर से "ख़लीलुल्लाह" (अल्लाह का मित्र) की उपाधि मिली और आप अपने परवरदिगार के बहुत महबूब (प्रिय) नबी हुवे, आपकी एक कुरबानी तो यह हुई कि आप अपने परवरदिगार का हुक्म पाकर अपने दूध पीते बच्चे को माँ के साथ ऐसी ग़ैरआबाद (जन रहित) और खुश्क जगह ठहरा दिया जहाँ कोई मददगार और हमदर्द (सहानमूति क़र्ता और सहायक) न था, और न खाने पीने का साधन था, फिर उस बेटे के जवान होने पर उस को जबह कर देने का हुक्म हुआ, उन्हों ने पूर्ण रूप से आज्ञा पालन किया लेकिन अल्लाह तआला ने हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को बचा दिया और फिर उनकी नस्ल से ही आखिरी (अन्तिम) नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पैदा किया।

चुनांचि इब्राहीम अलैहिस्सलाम

कबीले कुरैश की तफसील के लिये देखें : अल–विदायह वन–निहायह 2/200–205।

के दोनों बेटे इस्माईल और इसहाक़ और फिर इसहाक़ के बेटे यअ़क़ूब और उनके बेटे हज़रत यूसुफ अलैहिमिस्सलाम, यह सब नबी हुवे और खास तौर पर हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद में अल्लाह तआला ने महान और अन्तिम नबी बनाना तै किया, जिसको इन हालात में हिदायत और रहनुमाई (मार्ग दर्शन और नेतृत्व) का काम सुप्रुद करना था जबकि दुनिया अपने बिगाड़ और गिरावट की बहुत निचली सतह तक पहुंचने वाली थी।

यह आखिरी नबी हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की नस्ल (वंश) में पैदा हुवे और उनका वंशावली अपने कुटुम्ब व वंश में सबसे उत्तम शाखा द्वारा हज़रत इस्माईल तक पहुंचा था आपका मुबारक नसब इस प्रकार है :

मुहम्मद स0 बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्द मनाफ बिन कुसई बिन किलाब बिन मुर्रा बिन कअ़ब बिन लोई बिन ग़ालिब बिन फहर बिन मालिक बिन नज़र बिन कनाना बिन खुज़ैमा बिन मुदरिका बिन इलयास बिन मुज़र बिन नज़ार बिन मअद बिन अदनान,(1)

अदनान :

अदनान का नसब (वंश) सय्यदना इस्माईल बिन इब्राहीम अलैहिस्सलाम तक पहुंचता है, अदनान से ऊपर के सिलसिल–ए–नसब (वंश शृंखला) के मुकाबले में अदनान से नीचे का सिलसिला एतिहासिक लिहाज से जियादा प्रमाणित कथन से बताया गया है। अदनान की औलाद में "मुजर" और "रबीअः" जियादा मशहूर हुवे "मुजर" अरब प्रायद्वीप के पच्छिमी हिस्से "हिजाज" में आबाद रहे, और "रबीअः पूरबी हिस्से "नज्द" में चले गए, मुजर की औलाद में इलयास और कैस मशहूर हुवे, इलयास की औलाद में "कनाना" को शुहरत हुई और उनके नाम से उनकी औलाद मशहूर हुई, "कनाना" की औलाद में "नज़र" और उनकी औलाद में फहर हुवे, उनके लिये "कुरैश" का शब्द प्रयोग हुवा जो बअद में मशहूर हुए, और उनकी औलाद ने मक्का ही में निवास किया, उनकी औलाद में "कुसई" महत्वपूर्ण व्यक्ति हुए, उन के समय तक मक्का का प्रबन्धिक अधिकार "खुजाअः" के पास था, "कुसई" ने उसे प्राप्त कर लिया मक्का का प्रबन्धिक ढाँचा बहुत अच्छा बनाया जिसकी ज़िम्मेदारी शहर में रहने वाली कुरैशी शाखाओं में विभाजित हुई। कैस की औलाद "हिजाज़" के दूसरे हिस्सों में जैसे ताएफ़ और मक्का के आस पास के इलाके में जा कर बसी, उनमें "सकीफ़" ताएफ़ में और हवाज़िन मक्का और ताएफ़ के मध्यवर्ती क्षेत्र में आबाद हुई कुरैश की औलाद में कुसई के बेटे अब्द मनाफ हुवे, अब्द मनाफ के चार बेटे मुत्तलिब, नौफ़ल, अब्द शम्स और हाशिम हुवे, इन चारों में हाशिम को उनके चरित्र और प्रबन्धक व्यवस्था के कारण बड़ा सम्मान और मान्यता प्राप्त हुई, हाशिम की औलाद में अब्दुल मुत्तलिब हुवे जो बड़े होकर अपने वालिद (पिता) की विशेषताओं और जिम्मेदारियों के वारिस हुवे, आप ही हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दादा थे, उनके दस बेटे हुवे जिनमें हुजूरसल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वालिद माजिद (आदरणीय पिता) अब्दुल्लाह हुवे, दूसरे बेटों के नाम अबूतालिब (अब्द मनाफ़) जुबैर, हमजा, अब्बास, अबू लहब (अब्दुल उज्ज़ा) अल हारिस, हजिल, मुक़व्विम, ज़रार हैं, अबू तालिब को अपने खानदान वालों में अधिक विशेषता और शुहरत हासिल हुई, और उनसे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दुनयावी एतिबार से खास मदद और ताक़त मिली, दूसरे बेटों में हज़रत अब्बास और हज़रत हमज़ा इस्लाम भी लाए, और हुजूर सल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़ास तौर पर साथ दिया, अबू लहब ने नुबूवत से पहले तो हमर्ददी की, लेकिन इस्लाम की दअ़वत का दुशमनी के साथ मुकाबला किया और अदायत दिखाई।

❑❑

(1) अल बिदाया वल निहाया : 2/252–259, अनसाबुल अशराफ़, विलाजरी रिसर्च डा0 हमीदुल्लाह।

महब्बत मुझे उन जवानों से है

हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी (रह०)

इदारा

25 जुलाई 1978 को पंजाब युनिवर्सिटि लाहोर में इस्लामी जमअीतुन्नदवा के कैम्प में की गई तकरीर जिसमें सूबा पंजाब के विभिन स्थानों के विद्यार्थी और संगठन के उहदे दार और नुमाइन्दे मौजूद थे।

महब्बत मुझे उन जवानो से है

मस्नून खुत्बा और सूर–ए–कह्फ़ की कुछ आयतों की तिलावत के पश्चात :–

मेरे पियारे भाइयो मुझे आपके बीच आकर बहुत खुशी हुई इस खुशी को किसी ऐसे दावत के खादिम से, मदरसा के ऐसे उस्ताद से पूछना चाहिये जिसको नौजवानों पर और कौम के नौनिहालों पर अपना खूने जिगर खर्च करने की सआदत हासलि हुई हो और जो ऐसे नौजवानों को देखने की तम्मना करता हो जिनके बारे में इकबाल ने कहा है।

महब्बत मुझे उन जवानों से है
सितारों पे जो डालते हैंकमन्द

एक स्थान पर इतने नौजवान जिन्होंने अपने पालनहार के साथ यह अहद किया हो और जिन्होंने इरादा किया हो कि वह इस्लाम की सर बलन्दी के लिये कार्य करेंगे और सीधे मार्ग (सिराते मुस्तकीम) पर चलते रहेंगे,

सिराते मुस्तकीम पुल सिरात है

सिराते मुस्तकीम असलन तो सिराते मुस्तकीम है लेकिन कभी–कभी यह पुलसिरात की शक्ल इखतियार कर लेती है, कि बाल से जियादा बारीक तलवार से जियादा तेज हो जाती है। खुदा का शुक्र अदा करना चाहिये कि खुदा हम को इनआम देना चाहता है। हदीस में आता है कि जब मसायब पर इनआमात मिलने लगेंगे कियामत में, तो वह जिन्होंने इस्लाम की राह में परेशानिया उठाई हैं और बड़ी–बड़ी कठनाइयों से गुजरे है वह तमन्ना करेंगे कि काश उनकी चमड़ी कैंचियों से कतरी गई होती। अल्लहा का शुक्र अदा करना चाहिये कि उसने हमें आज़माइश के लाइक समझा। अगर कोई विद्यार्थी मेहनती है उसने वाकई पूरे साल मेहनत की है और अपना काम पूरा किया है तो अगर परीक्षा में परचा आसान आ जाये तो अपना सर पीट लेता है कि मैंने किस दिन के लिये मेहनत की थी। और रातों की नींद हराम की थी अगर यही आना था तो पहले से बता दिया गया होता और अगर परचा कठिन आता है तो मेंहनती तालिब इल्म समझता है कि उसकी मेहनत ढिकानें लगी।

अगर आसानियाँ हों जिन्दगी दुशवार हो जाये

यह शिकायात करना कि हमें बहुत कमजोर जमाना मिला है और हमारी राह काँटों से भरी हुई है कम हिम्मती की बात है बुलन्द हिम्मती की बात यह है कि अगर रास्ता आसान हो तो आरमी को शक होने लगे अपने बारे में कि हमें इस काबिल नहीं समझा गया कि हम किसी मुशकिल रास्ते पर चलें। अगर जिन्दगी सारी की सारी सुहूलतों से लबरेज होती तो जीवन में आनन्द न रहता। शायर ने खूब कहा है :–

चला जात हूँ हंस्ता खेलता मौजे हवादिस से
अगर आसानियो हों जिंदगी दुशवार हो जाये

मैंने आप के सामने सूर–ए–कहफ की आयत पढ़ी है जो मुझे बेइखतियार याद आई आपका रब आप से मुखातब है :

वह ऐसे नौज़वान थे जो अपने रब पर ईमान लाये, यहाँ फ़ित्या का लफज़ आया है फ़ित्या अरबी में फ़ता की जमा है (जमा किल्लत) और फ़ता नौजवान को कहते है यहाँ बहुत से अलफाज हो सकते थे लेकिन फ़ित्या का लफ्ज इस्तेमाल किया गया है। वह चन्द नौजवान थे जो अपने रब पर ईमान लाये। अपने रब पर उनका अकीदा मुसतहकम हुआ। आपके करने का और हमारे करने का जो काम है वह करें। फिर अल्लाह तआला की मदद आती है आप कुरआन शरीफ में देखते हैं, वह तुम्हारी ताक़त में अपनी ओर से बढ़ोतरी करेगा तुम्हारे

पास जो है लाकर रख दो हम उसमें इजाफा करेंगे। तुम अल्लाह की मदद करोगे तो अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा। ऐ याकूब (अ0 सं0) की .न्तान मेरी नेमत को याद करो और मेरे अहद को तुम वफा करो तुम्हारे अहद को मैं वफा करूंगा।

आँ हज़रत (स0) से एक दफा शिकायत की गई कि पानी नहीं है आप अल्लाह से दुआ कर सकते थे और पानी आसमान से बरस सकता था। लेकिन आप फरमाते है कि जो पानी बाकी है ले आओ पानी जब आता है तो उस में उगँली मुबारक डाल देते हैं तो वह उबलने लगता है। आप से विन्ती की गई कि खाने को कुछ नहीं है। आपने फरमाया कि जो कुछ है ले आओ। सूखी खजूरें खुश्क रोटियाँ और जौ वगैरा लोग लाये थोड़ा सा भन्डार था आप (स0) ने दुआ की हाथ लगाया और वह बढ़ गया। और सारे लशकर के लिये काफी हो गया।

अल्लाह का रसूल हज़रत ईसा की तरह यह दुआ भी कर सकता था कि ऐ अल्लाह आसमान से खाना उतार दे। मगर चूंकि आँहज़रत (स0) की इस उम्मत को मुखतलिफ अदवार से गुजरना था इस उम्मत को अन्दरूनी ताकत और अजम व इरादा से काम लेना था इस लिये इसकी तालीम दी गई।

यह समय हाथ पर हाथ रखने का नहीं हैं यह समय अमल का है बहुत कोशिश करने का है इस लिये उम्मत से कहा गया कि जो तुम्हारे पास है पेश करो फिर हम बढ़ोतरी करेंगे।

आँ हज़रत स0 के मोजिज़ात को भी इसी तरह पेश किया गया है। आपने तीन सो तेरह आदमियों को ले जाकर मैदान बद्र में खडा कर दिया (आप यह भी कर सकते थे कि फूंक मार देते लेकिन आप मदीना से चल कर आये–मदीना से बद्र की दूरी 70–80 मील के करीब है उसको तय फरमाया उस जमाने के तरीक–ए–जंग के मुताबिक लाइन लगवाई, जैसे एक फौजी–कमान्डर करता है। यह है सही तरीका सुन्नते नबवी का।

मसअला खूबियत का था

मैंने आपके सामने आयत पढ़ी कि अल्लाह तआला फरमाता है कि वह गिन्ती के कुछ नौजवान थे हुकूमते वक्त ने खान पान और व्यवसाय पर कब्जा कर रखा था। वह गल्ला दे तो लोगों को गल्ला मिले। वह लोगों को नौकरियाँ दे तो लोगों को नौकरी मिले तो वह हुकूमत गोया इस तरह से बनावटी मालिक बन गई थी। लेकिन वह अपने हकीकी रब पर ईमान लाये कि हमारा पालने वाला हमें रोजी देने वाला हमारे जीवन की आवश्यकता पूरी करने वाला हमें सम्मान देने वाला वह कोई और है और वही सब का पालन हार है वही रब सच्चा रब है जब उन्होंने यह सीढ़ी तय कर ली तो हमने उनकी हिदायत में बढ़ोतरी किया इससे मालूम हुआ कि हिदायात का सरचशमा अल्लाह तआलाकी जात है और उसकी मारफत है हिदायत वहाँ से मिलती है अपनी दिमागी सलाहियत से अपनी ज़ेहानत से, तहरीरों से, केवल अध्यन से, कुतुब खाना के इलमी ज़खीरा से नहीं मिला करती।

हिदायत की निसबत अपनी तरफ की है और बादशाहों के अन्दाज खिताब की तरह जमा का सीगा इस्तेमाल किया है, हमने उनकी हिदायत में इजाफा किया तो वह कहीं से कहीं पहुंच गये। अल्लाह के सामने सर झुकाया उस से मागंना शुरू किया। उसकी मारफत पर मेहनत की उसकी सिफाते आलिया और असमाये हुसना की मारफत (पहचान) की समझ हासिल करने में उन्होंने गौर व फिक्र से काम लिया तो हमने उनकी हिदायत को कहीं से कहीं पहुंचा दिया।

नौजवानों का जज़्ब–ए–अमल

अब कठनाइयों का सामना पड़ा यह वाकिया उस समय का है जब ईसाइयत नई–नई जज़ीरा नुमाये सेना और अपने असल मरकज से निकल कर रूमा पहुंची जो कट्टर किस्म की बुत पूजने वाली हुकूमत थी। जब यह प्रचारक वहाँ पहुंचे तो उनकी तबलीग से नौजवान भी मुतअसिर होने लगे। तारीख के बहुत से अदवार में ऐसा नजर आता है कि नौजवानों ने पहले असर कुबूल किये हैं इस लिये कि जियादा उमर रखने वाले मुअम्मर लोगो के साथ बहुत से वजन बंधे होते हैं जैसे तैरने के

लिये आप दरया में जाते हैं जितने हलके होंगे उतने ही आसानी से तैर सकेंगे लेकिन अगर किसी के साथ बोझल पत्थर बंधे हो कुछ सामान भी उसके साथ हो तो उसके लिये दरया को पार करना मुशकिल होगा जो जितना हलका होता है वह उतनी जल्दी मंजिल तय करता है। बादशाहों और हुकमरानों से तअल्लुकात और रस्म व रिवाज के पत्थर मुअम्मर लोगों की राह में जैसे हायल होते हैं नौजवानो के रास्ते में हायल नहीं होते रूकावट नहीं बनते, नया खून नई उम्र नया जोश नई उमंगें, नये हौसले। एक आवाज उनके कान में पड़ी, देखिये कुरआन मजीद में सूरह आल इमरान में आया है परवरदिगार हमारे कुबूले हक की तारीख बस इतनी है कि हमारे कान में एक आवाज पड़ी एक मुनादिये हक ने कहा अपने रब पर ईमान लाओ, हम ईमान ले आये तो यह नवजवान जो थे उनके पाँव में वह बेड़ियाँ नहीं पड़ी थी जो अकसर पुरानी नसल के लोगों के पाँव में पड़ी रहती हैं। इस लिये गर्व के साथ कहा गया कि उनको कोई देर नहीं लगी ईमान लाने में।

हरी–भरी तथा फलों से भरी घाटी तथा काँटों से भरी घाटी :–

अब वह घटियाँ आईं जो दावत के मैदान में आती हैं और वह दो तरह की होती हैं। एक घाटी काँटों से भरी और एक घाटी हरी–भरी फूलों से भरी घाटी। काँटों से भरी घाटी यह है कि रास्ते में काँटे बिछे हों बल्कि अंगारे बिछे हों और फूलों से हरी–भरी घाटी यह है कि उस में, उन्नति करने के अवसर, पुरस्कार, बड़ी–बड़ी नौकरीयाँ, बड़े–बड़े पदों का लालच हो। यह फूलों से भरी घाटी है। कभी काँटों से भरी घाटी कठिन होती है कभी–कभी फूलों से हरी–भरी घाटी लेकिन बहुत से अनुभवीयों (तजुरबाकार) का कहना है कि हरी–भरी घाटी काँटों से भरी घाटी से अधिक कठिन होती है। लालच सजा के मुकाबले में अधिक प्रभावशाली होता है। आप को शायद मालूम होगा कि इमाम अहमद बिन हम्बल (रह0) को एक मंजिल वह पेश आई कि मुअतसिम ने ख़लक़े कुर्आन के अक़ीदः पर उन को मजबूर करना चाहा और चाहा कि इस मसले पर वह हस्ताक्षर कर दें। उन्हों ने इंकार कर दिया तो मुअतसिम ने उन को दरबार में बुलाया और कहा अहमद तुम अगर मेरी बात मान लोगे तो मेरे वली अहद (पदाधिकारी) की तरह मेरे प्रिय और मेरे दरबारी बन जाओ गे, और इस जगह पर बैठोगे उन्होंने कहा अमीरुल मोमिनीन! किताब व सुन्नत से कोई दलील लाइये तो मैं इस को मानलूं। वह झुंझलाया और उसने जल्लाद को आदेश दिया और उसने एक कोड़ा पूरी ताकत से मारा। जल्लाद कहता है वल्लाह वह कोड़ा अगर हाथी पर पड़ता तो चिंघाड़ मार कर भाग जाता लेकिन वह बराबर कोड़े खाते रहे।

इसके बाद एक दूसरा जमाना आया जब मुअतसिम का देहान्त हो गया और उस का बेटा मुतवक्किल सिंघासन पर बैठा उस ने इमाम अहमद को "सुर्रमन राई" में तलब किया और बड़ी आव भगत की। यह अपने साथ कुछ खाने पीने का सामान ले गये थे, सत्तू या इस तरह की कोई चीज। जब खाने का समय आता वही खाते और शाही खाने को हाथ नहीं लगाते थे। बाद में मुतवक्किल अशरफियों के तोड़े भेजने शुरु किये तो उनके बेटे फरमाते हैं कि वालिद साहब (पिता) फरमाते कि मुअतसिम के कोड़ों से अधिक मुतवाक्किल के तोड़े मेरे लिये परीक्षा की घड़ी हैं।

यह सच है कि कभी हुकूमतें यह करती हैं, कभी वह करती हैं। कभी यह समझती हैं कि कोड़े से दब जायेगा तो कोड़े दिखाती हैं और जब यह मालूम होता है कि कोड़े से नहीं दबेगा तो तोड़े से दबेगा तो तोड़े पेश करती हैं। यह मंजिल (परिस्थिति) बड़ी कठिन होती है। बाज मर्तबा आदमी इस प्रकार नहीं झुकता मगर माँ–बाप के बराबर जोर देने पर झुक जाता है जो दरबार से सम्बन्धित रहते थे विभिन्न पदों पर कार्यरत थे। कहा गया कि अपने लड़के को समझाओ हमारी बात मानें अपना भविष्य बनाएं। तुम्हारे बाद आखिर कौन होगा। तुम्हारे ही वो बेटे होंगे लेकिन जब

इस से काम नहीं चलता तो उन को धमकाना शुरु किया और उन को पिटवाया और उन का पीछा किया तो उस समय उल्लाह की सहायता की आवश्यकता थी।

हमने उनके दिलों को थाम लिया

हमने उन के दिलों को शक्तिशाली बना दिया। हमने उनके दिलों को थाम लिया, बान्ध दिया। इसलिए कि जब कोई चीज़ खुली होती है तो हवा के झोंके से उड़ जाती है। किसी चीज़ से बन्धी हो तो स्थिर (कायम) रहती है तो हमने दिलों को बान्ध रखा, वह इधर–उधर हिलने झुलने न पायें "वह खड़े हुए और उन्होंने कहा हमारा रब वही है जो आसमानों और जमीनों का रब है।" खड़े होने का अर्थ यह नहीं है कि वह बैठे थे और खड़े हो गये बल्कि उनके अन्दर एक इरादा पैदा हो गया। उन्हों ने एलान किया कि हमारा खुदा वह है जो आसमान और जमीन का रब है।

"हम उसके अतिरिक्त किसी खुदा किसी माबूद (पूज्य) की पूजा नहीं करेंगे। अगर हम ने ज़बान से यह बात निकाली तो बड़ी अनुचित बात होगी बड़ी खिलाफे वक़िआ (सत्य के खिलाफ़) बात होगी" यह हमारी कौम बड़े अच्छे संजीदा (गम्भीर) लोग मालूम होते हैं, बड़े सम्मानित लोग हैं, अनुभवी हैं। इसके बावजूद उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर दूसरे माबूद (पूज्य) बना रखे हैं। "उस पर कोई दलील नहीं लाए और कौन है उस व्यक्ति से बड़ा अत्याचारी जिसने अल्लाह पर झूठ गढ़ा"

तीन बातें

मेरे प्रिय भाईयों! यह मैंने आपके सामने सूरः कहफ की आयतें पढ़ी हैं। इस की व्याख्या (तशरीह) की है। इस में हम को यह सबक मिलता है कि पहले ईमान पक्का (मुस्तहकम) होना चाहिये। अगर हम विद्यार्थी हैं तो इलमी अन्दाज के साथ और अगर हम आम मुसलमान हैं तो भी पूरी सच्चाई के साथ हमारा ईमान खुदा पर काइम होना चाहिये।

दूसरी बात यह है कि उस चशम–ए–हिदायत (आदेश के स्रोत) से हमारा सम्बन्ध होना चाहिये जहाँ से हिदायत का फैजान होता है (मार्ग दर्शन का लाभ प्राप्त होता है) किताब व सुन्नत के अध्यन, रसूल के नमूने की जिन्दगी और सहाबा–ए–किराम और इस्लाम के मुजाहिदीन के हालात से हमें ताकत हासिल करना चाहिये जिस प्रकार बैटरी चार्ज की जाती है। सेल जब समाप्त हो जाते है तो बदले जाते है। हम और आप इस भौतिक (मादी) संसार में चलते फिरते हैं, ऐसे अध्यापकों से पढ़ते हैं जिन को खुद पूरी तौर पर इन दीनी और गैबी हक़ीक़तों पर यकीन हासलि नहीं होता। हमारा जमाना ऐसी चीजों से भरा हुआ है कि पग–पग पर हम को खुदा से गाफिल करने की चीजें मिलती है और हमें उनका सामना करना पड़ता है। हर चीज अपने को भूलने और खुदा को भुलाने वाली होती है। टेलीविजन को देखिये, रेडियो सुनये, समाचार पत्र पढ़िये, यहाँ तक कि साहित्य जिस को पवित्र, निर्पक्ष (गैर जानिबदार) होना चाहिये, वह भी निर्पक्ष नहीं रहा। वह बुराई का एजेंट बना हुआ है और बहुत ही सस्ता एजेंट झूठे मूल्यों का। हमारा साहित्य इस समय बुराई, गन्दे विचारों और बुरे आचरण को संवारने वाला बना हुआ है। इन सारी चीजों की नदी हमारे चारो तरफ बह रही है और इस नदी में हम को झोक दिया गया है। हमारे हालात ने हमारी शिक्षा प्रणाली ने हमको इस दरया के हवाले कर दिया है।

"दामन तर मकुन होशियार बाश"

ख़बरदार बेटा दामन तर न होने पाए तो दामन बचाने के लिए जरूरत है कि ईमान का दिया रौशन करें, और दिलों में गर्मी और महब्बत पैदा करें जिस के बिना हम इन बुरी इच्छाओं का मुकाबला नहीं कर सकते। हम इन चीजों का मुकाबला केवल आचरण के नीयमों और संघ के प्रबन्धन (निजामे जमाअ़त) से नहीं कर सकते। अनुभव की बात बताता हूँ कि जमाना इतना जालिम है उसकी मांगें इतनी कहर ढाने वाली हैं कि अगर उनके मुकाबले में ईमान की ताकत न हो और वह नमूने आपके सामने न हों जो सीरत (रसूलुल्लाह सल्ल0) की जीवनी और (आचरण) के अन्दर हम को मिलते हैं तो हम जमाने का मुकबला नहीं कर सकते।

हथियार बन्द भौतिकता का मुकाबला (मुसल्लह माद्दीयत का मुकाबला)

हमारी नमाजें दुरुस्त हों। यह ताकत नमाजों से पैदा होती है। दुआ से पैदा होती है, तिलावत से पैदा होती है। सजदों से मानूस होने से पैदा होती है। खुदा के बन्दों के पास बैठने से पैदा होती है। अगर हम यह चाहते हैं कि इस मुसल्लह माद्दीयत का मुकाबला करें जिस को यूरोप व अमरीका ने अपने बेहतरीन हथियारों से लैस कर रखा है। उस की हर चीज इतनी ताक़त वाली है कि बड़े–बड़े शेरों के पैर उखड़ जायें तो उसका मुकाबला हम केवल संस्था से केवल अपने अखलाक (नैतिकता) के नीयमों से नहीं कर सकते। इस के लिए हमारे अन्दर ईमानी ताकत होनी चाहिये। अल्लाह से पूरा लगाव होना चाहिये। अल्लाह के साथ ऐसा सम्बन्ध होना चाहिये कि हम को वह सजदा नसीब हो जाए जिस की ज़मीन ताब नहीं ला सकती।

वह सजदा रुहे जमीन जिससे काँप जाती थी
उस को आज तरस्ते हैं मेंमबरो मिहराब

रुहे जमीन कांपे या न कांपे, अपना कलेजा तो काँप जाए अपना दिल तो काँप जाए, आँखे तो आँसुओं से भर जाये। यह सजदा जब आप को नसीब होगा तो आपको माद्दीयत पर काबू होगा। अब जो जमाना है उस का मुकाबला करने के लिए आप के अन्दर ताकत की जरुरत है। आप के अन्दर वह ताकत हो, खुदा के नाम से महब्बत हो, उसके रसूल सल्ल0 से महब्बत हो, सुन्नतों का बन्दोबस्त, और उस की महानता आप के दिल में बैठी हुई हो। सब में कमियाँ होती हैं लेकिन अपनी कमियों को आप समझें। उन पर इसरार न करें। उनके लिए दलीलें न दें बल्कि यह कहें कि आदर्श (Ideal) तो वही है, नमूना तो वही है, करना तो हम को वही है जो हक़ है। खुदा आपको तौफीक देगा और यह कोताहियाँ भी माफ़ कर देगा। बहुत ही पेचीदा और नाजुक दौर हमारे और आपके हिस्से में आया है। इस में अगर दीन के तकाज़े पूरे किये और इस्लाम के झण्डे को हमने झुकने नहीं दिया तो आप को जो भी दुन्या में मिलेगा वह तो ख़ैर मिलेगा लेकिन आख़िरत में जो कुछ मिलेगा, उसका हम गुमान भी नहीं कर सकते।

पहले अपनी चिन्ता कीजिये

पहले अपनी फिक्र कीजिये। इस जमाने की एक खराबी यह है कि वह दूसरों की चिन्ता अधिक अपनी फिक्र कम होती है। हमारे सामूहिक दर्शन (फलसफा) और राज्यनीत ने यह विचार पैदा किया है कि आदमी की नज़र दूसरों की बुराइयों पर पड़ती है। उस का हिसाब किताब अधिकतर दूसरों से होता है। फुलाँ पार्टी यह कर रही है, फुलाँ समुदाय यह कर रहा है। फुलाँ शख़्स अपनी ज़िम्मेदारी पूरी नहीं कर रहा है मगर उस को फुर्सत नहीं मिलती कि वह अपना जाइजा (समीक्षा) ले और देखे कि हम में क्या खराबी है।

❑❑

स्वतंत्रा संग्राम में ....

मौलाना की इच्छा दारुल मुसन्निफीन में रहकर लेखन व संकलन और अल्लामा शिबली की सीरतुन नबी (मुहम्मद सल्ल0 की जीवनी), आलमगीर (औरंगजेब) पर अंग्रेजी में लिखने को थी लेकिन कौमी और स्वतंत्रा आन्दोलन के कामों में लगे रहने और जेल की सलाखों ने आप को उस का मौका नहीं दिया कि आप नदवतुल उलमा और दारुल मुसन्निफीन की कार्यविधियों (सरगर्मी) में शरीक हो सकें लेकिन एक विद्यार्थी के रुप में मुहम्मद अली जौहर के बारे में केवल इतना ही कह सकते हैं कि अगर यह ख़िलाफ़त आन्दोलन से न जुड़े होते तो देश की आजादी 1947 में सम्भव न थी और गांधी जी जैसे व्यक्ति कभी देश के महात्मा नहीं बन सकते थे। यह केवल मुहम्मद अली जौहर का व्यक्तित्व था कि जिसने वतन की आजादी के लिए ख़िलाफ़त आन्दोलन को पूरी ताकत के साथ देश की आज़ादी की तरफ मोड़ दिया और अंग्रेजों को यह कह कर कि अब हम गुलाम मुल्क में वापस नहीं जायेंगे शीघ्र से शीघ्र देश की आजादी का मार्ग आसान कर दिया और एक सच्चे पक्के, साहसी मुसलमान ही इस कार्नामे का हकदार हो सकता था और वह मुहम्मद अली जौहर के रुप में अल्लाह तआला ने हिन्दुस्तानियों को प्रदान किया। अल्लाह तआला उनकी कब्र को नूर से भरदे।

❑❑

दीनी मदरसों के पाठ्यक्रम में आधुनिक विषय

- तसनीम फात्मा

- सैयद हामिद

दीनी मदरसों के पाठ्यक्रम में आधुनिक शिक्षा को सम्मिलित करने का प्रयास करते हुए सरकार ने कई बार ठोकरें खायीं। पहली गलती उस समय हुई जब उस ने मुसलमानों की सामान्य शिक्षा से गफलत बरतते हुए उनकी दीनी शिक्षा की ओर असाधारण ध्यान देना शुरू कर दिया। यद्यपि मुसलमानों के केवल 4 प्रतिशत बच्चे मदरसों में शिक्षा पाते हैं। 96 प्रतिशत को गफलत की शिकायत है। इसे ऐसा करते हुए देखा तो बहुत से मुसलमानों के दिलों में यह आशँका घर कर गई कि "उनकी आबादी के क्षेत्रों में समुचित और आवश्यक संख्या में आधुनिक शिक्षा के स्कूल खोलने के बजाय जो कि उसका कर्तव्य और इंसाफ की माँग है, सरकार ने मदरसों की शिक्षा में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया, उसकी नियत में फुतूर जरूर है।" इस प्रकार की व्यंग्यात्मक आपत्तियाँ भी की गईं और सरकार के पास इनका कोई जवाब था भी नहीं।

गत शताब्दी के नवें दशक में सरकार ने मदरसों में आधुनिक शिक्षा की स्कीम शुरू की। ऐसा करने से पहले उसने एक गलती की और एक कदम सही उठाया। सही कदम तो यह था कि मदरसों के प्रतिनिधियों की एक बड़ी संख्या बुलायी, उन्हें स्कीम से परिचित कराया, उन्हें बताया कि सरकार का कोई इरादा मदरसों में हस्तक्षेप का नहीं है, वह तो उन्हें मदरसों में आधुनिक विषयों की शिक्षा के लिये अतिरिक्त ज्ञान के आर्थिक और मानव संसाधन उपलब्ध करेगी। गलती यह कि आठवें और नवें दशक में मुसलमानों की प्रतिष्ठित और विश्वसनीय संस्था अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी ने इस क्रम में जो शुरूआत की थी और मदरसों से जो सम्पर्क स्थापित किया था, उसकी पूरी अनदेखी की गयी। यद्यपि करना यह चाहिए था कि अनुभव के आलोक में उसे अच्छा बनाया जाता। इस स्कीम में गुण और मात्रा दोनों प्रकार से कुछ कमियाँ रह गयी थीं। पाँच आधुनिक विषयों को पढ़ाने के लिए हर मदरसे में केवल दो अध्यापक का प्रस्ताव किया गया और प्रमाणपत्र और शैक्षिक योग्यता के अनुसार अंग्रज़ी स्कूलों के मुकाबले में अनानुभवी और अप्रशिक्षित अध्यापकों से काम चलाया गया। इसके अतिरिक्त एक ऐसी स्कीम के निरीक्षण की कोई व्यवस्था नहीं की गयी जिसे स्वाभाविक कठिनाइयों का सामना करना था।

तथापि स्कीम चल निकली थी और आगे बढ़ने के लिए इसके विस्तार और अनुभव के आलोक में इसमें संशोधन वांछित था। सरकार यथार्थ और यथोचित को छोड़कर आभासमात्र की आजमाईश में लग गई। उसे मालूम होना चाहिए था कि लगभग दो दशक के अनुभव का लाभ उठाने की राह खुली हुई है। इस राह पर आगे बढ़ने के बजाय कि सीधा रास्ता वही था, सरकार ने सीख देने वाले अनुभव की अनदेखी करते हुए केन्द्र में मदरसा बोर्ड की स्थापना का निर्णय किया। दुःख की बात है कि यह निर्णय देखने में कुछ एक व्यक्तियों की सोच थी। यद्यपि इस पर पूरे देश में विचार विमर्श होना चाहिए था। वास्तव में यह बात गैर–जिम्मेदारी की थी, जिसके कारण वह उद्देश्य पर काफी दूर निकल चुके थे, समाप्त हो गया और आधुनिक विषयों को सम्मिलित करना विवादास्पद हो गया।

जरा इस चूक पर ध्यान दीजिए कि इससे पहले मदरसा बोर्ड के जो प्रयोग कुछ एक रियासतों में हुए थे उनकी असफलता से आँखे बन्द कर ली गयीं। बिहार में तो मदरसा बोर्ड की स्कीम एक बड़ी खराबी का कारण बन चुकी थी। और इसके एक अध्यक्ष को कई

साल जेल में काटने पड़े थे।

सरकार को यह एहसास होना चाहिए था कि मुसलमान मदरसों का संवेदनशील होना उचित है। और उन्हें चलाने के लिए वह सरकार की सहायता को कभी स्वीकार नहीं करेंगे। इनको केवल आधुनिक शिक्षा के लिए सरकारी सहायता स्वीकार हो सकती है और वह भी बिना किसी शर्त और बन्धन के। होना तो यह चाहिए था कि पाठ्यक्रम में बड़े पैमाने पर संशोधन करने के बजाये प्रारम्भ में शिक्षण शैली में संशोधन किया जाता। आधुनिक शिक्षा का जहाँ तक प्रश्न है तो इसमें प्रयोग और आवश्यकता के अन्तर्गत परिवर्तन होते रहे हैं। इसके विपरीत मदरसों के शिक्षण विधि में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। मानो पढ़ाने की यह विधि जीवनदायी विकास से वंचित रही। यद्यपि परिवर्तन प्रकृति का नियम है और मनुष्य स्वाभाव से परिवर्तन चाहता है।

साराँश यह है, कि अगर शुरूआत शिक्षण–विधि में परिवर्तन और संशोधन से की जाती तो मदरसों की शिक्षा में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन आ जाता। यह मात्र एक आपत्ति थी। अब हम पाठ्यक्रम की ओर लौटते हैं। पाठ्यक्रम में कुछ और बढ़ाना इसलिए आवश्यक है कि मदरसों से पढ़कर निकलने वालों को प्रत्येक दशा में इस प्रकार अपने को जानकार रखना होगा जो जीवन और सृष्टि और उसके कभी न रूकने वाले अनुभवों को अपने घेरे में ले सके। मदरसों के व्यवस्थापक समय की तकनीकी विजय को देखते हुए स्वयं इस ओर आते और आरम्भ हो भी गया था। सरकार ने जल्दबाजी दिखायी और व्यापकता के हाथों आत्मसुरक्षा की आग भड़का दी जिसे समाप्त करना बहुत कठिन होगा। यह सोचना एक भूल थी कि मदरसे अपनी स्वायत्तता, स्वतन्त्रता और विशिष्टता को सरकार के इशारे पर बलिदान कर देंगे। सरकार की क्या नियत थी, यह तो वही जानती है, परन्तु जिस उद्देश्य का उसने एलान किया है उसको प्राप्त करने के लिए केन्द्रीय मदरसा ऐक्ट बहुत भोंडा तरीका है जिसे कार्यान्वित करने के प्रयास मुसलमानों के उच्च प्रतिनिधित्व करने वाले संगठनों के खुल्लम खुल्ला और सशक्त विरोध के बावजूद अभी तक जारी हैं। उल्लिखित ऐक्ट जिस प्रकार बना है वह यह एलान कर रहा है कि उस का खमीर अवामी नहीं सरकारी है।

अब मदरसों को नई दिशा देने का अभियान इस बिन्दु पर पहुंच गया है, जहाँ सरकार को इस पर नये सिरे से ध्यान देना चाहिए और मुसलमानों के नेतृत्व से विचार–विमर्श के बाद स्कीम को नया स्वरूप देना ही देश और देशवासियों के लिए लाभदायक होगा। इसके मलबे से निम्नलिखित असासः को बचा लेन्न समझदारी होगी। सरकार पर वाजिब है कि वह इन बातों के सम्बन्ध में अपनी पॉलीसी को स्पष्ट कर दे।

1. शिक्षण पद्धति में परिवर्तन के सम्बन्ध में संवाद का सिलसिला शुरू करना।

2. महत्वपूर्ण आधुनिक विषयों की उपादेयता का मदरसे के लोगों को कायल करना।

3. एक बार यह बात स्पष्ट कर देना कि सरकार इस मुद्दे में किसी प्रकार के दबाव डालने की कायल नहीं है। मदरसे पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धति के चयन में हर प्रकार से स्वतन्त्र हैं।

4. यह एलान कि सरकार सहायता के इच्छुक मदरसों की सहायता करने के लिए तैयार है। इस क्रम में उन प्रयासों की समीक्षा अवश्य कर लेनी चाहिए जो अब तक होते रहे हैं और जिसमें हमदर्द ऐजुकेशन सोसायटी कुल मिलाकर अन्य संगठनों के पेश–पेश रही है।

5. सरकार का कोई इरादा केन्द्रीय बोर्ड को इस स्वरूप में लागू करने का नहीं है।

6. इस समय जो स्कीम गत दो दशकों से चल रही है, उसको प्रयोग और अनदाजे के आलोक में परामर्श के बाद परिवर्तित करना। हमारे बड़े–बड़े दारूल–उलूम का समर्थन प्राप्त करना।

(राष्ट्रीय सहारा उर्दू, 23.10.2009)

❑❑

किस्त 21

हम कैसे पढ़ायें?

शिक्षकों के लिये

– डॉ. सलामत उल्लाह

पढ़ाने के कुछ एक गुर

अब तक हमने शिक्षण की विषय वस्तु और उसकी क्रमवद्धता से बहस की है। शिक्षण की विषय–वस्तु का चयन और उस के दायरे को निश्चित करना उस्ताद के इख्तियार से बाहर है। लेकिन अब हम शिक्षण के उस पहलू को पेश करेंगे जो सिर्फ उस्ताद से संम्बन्धित है, अर्थात, "शिक्षण विधि।"

शीर्षक की व्याख्या

इस अध्याय में हम पढ़ाने के चन्द गुर बतायें गे जो हर विषय में कामयाबी के साथ बर्ते जा सकते हैं। यह गुर बहुत आम और मशहूर हैं। यह मनोविज्ञान के गहरे उसूलों पर आधारित हैं लेकिन हम इन्हें यहाँ सीधी सादी आम समझ की भाषा में बयान करते हैं ताकि यह आसानी से समझ में आ जायें। हमें आशा है कि इनका अध्ययन बहुत सरसरी तौर पर नहीं किया जायेगा बल्कि उन ज्ञानमयी बिन्दुओं को पूरी तरह समझने की कोशिश की जायेगी जो इन सीधे सादे शब्दों में निहित हैं।

1 आसान से मुश्किल की तरफ चलो

यह गुर इतना माकूल मालूम होता है कि इस के लिये कोई तर्क ज़रूरी नहीं लेकिन इस गुर को बरतते समय हमें याद रखना चाहिये कि एक ही चीज़ विभिन्न स्टेजेज पर आसान और मुश्किल हो सकती है। एक चीज जो शुरू में मुश्किल मालूम होती है सीख लेने के बाद आसान हो जाती है। इस लिये किसी चीज के आसान या मुश्किल होने की कसौटी सीखने वाले की क्षमता और योग्यता है। शिक्षण में हमें हमेशा बच्चे की आसानी का ख्याल रखना चाहिये। बहुत मुमकिन है कि एक चीज हमारे नजदीक आसान हो लेकिन बच्चे की समझ से बाहर हो। मिसाल के तौर पर गणित में "भाग का कायदा" हमारे लिये बहुत आसान चीज़ है और ज़ाहिर में ऐसा मालूम होता है कि "गुणा" सीखने के बाद "भाग देने में" कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिये, लेकिन यदि ध्यान से देखा जाये तो "भाग देने" का कायदा एक नव सिखिये के लिये कठिनाइयों से भरा है। इसी तरह कुछ पढ़े लिखे लोगों को ऐसा मालूम होता हे कि इतिहास का शिक्षण यदि बुनियादी शब्दावली की परिभाषा से शुरू की जाये तो ऐतिहासिक घटनाओं के समझने में बहुत आसानी होगी। अगर बच्चे शुरू ही से जैसे रियासत, बादशाह, असेम्बली वंशज, राष्ट्र, लोकतंत्र आदि के अर्थ समझ लें तो इतिहास का शिक्षण सही और सार्थक होगा, लेकिन यह ख्याल गलत है। मुमकिन है प्रौढ़ के नजदीक यह प्रक्रिया आसान हो, लेकिन बच्चे के लिये यह बहुत मुश्किल है और इस से बच्चों में इतिहास से नफरत पैदा होने की सम्भावना है। बुनियादी शब्दावली की परिकल्पना स्वतः घटनाओं के साथ–साथ साफ होती जायेगी। बच्चा इन्सानी ज़िन्दगी से ज़्यादा दिलचस्पी रखता है। यही कारण है कि औरों की अपेक्षा वह कहानियाँ बड़े शौक़ और बेताबी से सुनता है। शब्दावली की परिभाषा से उस का जी बहुत जल्द उकता जायेगा और फिर वह इतिहास के शिक्षण से भागने लगेगा अतः इस सिद्धान्त को व्यवहार में लाते समय हमें बच्चे की मानसिक क्षमता को ध्यान में रखना चाहिये।

2. मालूम से नामालूम की तरफ

पढ़ाने का एक मशहूर गुर है कि नई चीज़ बताने के लिये उस से सम्बन्धित पूर्व ज्ञान से मदद लेनी चाहिये। विषयों की तरतीब के अध्याय में भी इस ओर संकेत किया गया है कि टीचर उस समय तक कामयाब नहीं हो सकता जब तक वह अपने पाठ इस प्रकार

क्रमबद्ध न करे कि प्रत्येक अगला कदम पिछले कदम से सम्बन्ध रखता हो। अतः हर पाठ में कुछ बातें नई अर्थात नामालूम और कुछ बातें पुरानी अर्थात मालूम मौजूद होना ज़रूरी है। इस के बिना सीखने के लिये आमादगी नहीं हो सकती। यहाँ यह बात याद रखने के काबिल है कि एक तरफ अगर बच्चे मालूम घटनाओं की व्याख्या और बार–बार दोहराने से उकता जाते हैं तो दूसरी तरफ वह उस चीज से भी भागते हैं जिन में तमाम बातें उन के लिये नई ही नई हैं, अर्थात् उनके गत अनुभवों से कोई सम्बन्ध नहीं रखतीं। इन दोनों उकता देने वाली सूरतों से बचना चाहिये। बच्चों को किसी काम में रूचि केवल उसी समय पैदा हो सकती है जब कि उस से उन की जिज्ञासा जागृत हो और उस की पूर्ति के लिये उन्हें वास्तविक प्रयास करना पड़े अर्थात मालूम चीजों से (ज्ञात) नामालूम चीज़ (अज्ञात) की खोज निकालने की इच्छा पैदा हो।

3. नज़दीक से दूर की तरफ चलो

निस्सन्देह हम कोरी कल्पनाओं की मदद से नई चीजों को समझने में बहुत सहूलत महसूस करते हैं और इस तरह हमारा बहुत सा समय और मेहनत बच जाती है। और यह भी ठीक है कि मनुष्य में इन कल्पनाओं से काम लेने की जितनी अधिक योग्यता और क्षमता होती है उतनी ही उस की कार कर्दगी बढ़ जाती है। दूसरे शब्दों में कानून और क़ायदे में कोरी कल्पनाओं को जाहिर करने की शक्लें हैं। चीजों और घटनाओं की असल समझने में समय और मेहनत बचाते हैं। असल में प्रत्येक कोरी कल्पना अनेक नजदीक की चीजों पर विचार करने के बाद प्राप्त होती है। इस लिये आम तरीका यह होना चाहिये कि हम पढ़ाने की प्रक्रिया में नज़दीक की चीज़ों से शुरू करें और इनकी मदद से कोरी कल्पनाओं को साकार करायें। यह एक खुली हुई बात है। इस के लिये किसी दलील की ज़रूरत नहीं। ज़ाहिर है कि मिसालें कायदों और उसूलों (नियम) से पहले प्रस्तुत करना चाहिये। क्यों कि बिना इस के नियम अर्थहीन हैं। लेकिन हमें उन गल्तियों से आगहा होना चाहिये जो इस गुर को प्रयोग करते समय हो सकती हैं। कभी–कभी देखने में आया है कि अध्यापक नज़दीक की चीज़ों पर इतना बल देता है कि कोरे नतीज़े निकालने की नौबत नहीं आती। गणित के किसी नियम का अभ्यास कराते समय हमेशा नजदीक की चीजों में जवाब देने पर बल देना उचित नहीं। अगर बच्चों ने 5+7 का अर्थ नज़दीक की चीज़ों की मदद से अच्छी तरह समझ लिये हैं तो यह बात फजूल सी मालूम होती है कि इस पर बल दिया जाये कि बच्चा हमेशा यह कहे कि 7 क़लम और 5 कलम 12 कलम होते हैं या 7 पैसे और 5 पैसे 12 पैसे होते हैं या 7 चाकू और 5 चाकू 12 चाकू होते हैं आदि। अगर वह 7 और 5, बारह कहना सीख गया है तो नज़ीदक की चीज़ों से सम्बन्ध दिखा कर इस हकीकत को जाहिर करने की कोई ज़रूरत नहीं। इस प्रकार के अभयास से समय नष्ट होता है। इस प्रकार प्रकृति अध्ययन के सिलसिले में यदि निरीक्षण और प्रयोग से बच्चे कुछ नतीजे निकाल सकते हैं, तो न सिर्फ इस की इजाजत देनी चाहिये बल्कि ऐसा करने के लिये उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिये। उचित रास्ता यह है कि न तो बच्चे आम नतीजे बिना समझे बूझे रटने पर मजबूर किये जायें न उन्हें उन तक पहुंचने के लिये जानबूझ कर रोका जाये इस सिलसिले में एक बात और याद रखनी ज़रूरी है कि मात्र अकेले नियमों को बनालेना ही काफी नहीं है जब तक उन के प्रयोग का अभ्यास न हो जाये। वह जानकारी को मात्र एक बेकार भण्डार की हैसियत रखते हैं। किसी अकेले यथार्थ का सही मसरफ़ यही है कि वह उन नजदीक के विवरण पर प्रकाश डाले जो अब तक एक पहेली मालूम होते रहे हैं। मिसाल के तौर पर अगर बच्चों ने प्रयोग द्वारा विज्ञान का यह नियम कि गर्मी से चीज़ें फैलती हैं मालूम कर लिया है तो फिर उन्हें इस नियम के द्वारा वह बातें समझनी चाहिये जो इस पर आधारित हैं जैसे रेल की दो पटरियों को जोड़ते समय थोड़ी सी जगह क्यों ख़ाली छोड़

दी जाती है? इक्के और गाडियों की लोहे के पहियों पर थोड़ी दूर चलने के बाद पानी डालने की ज़रूरत क्यों होती है? आदि।

4. कुल से अंश की ओर चलो

किसी वस्तु के अंश कुल की अपेक्षा अधिक पेचीदा होते हैं। अतः शिक्षण में हमें कुल से अंश की तरफ बढ़ना चाहिये। अर्थात पहले कुल चीज़ प्रस्तुत की जाये फिर उस के भाग जिन से वह बनी है। जैसे पढ़ना सिखाने में बजाय इस के कि पहले बच्चे को अ, आ, इ, ई, बताया जाये जो उस के लिये अर्थहीन हैं और फिर उन्हें जोड कर शब्द और वाक्य बनाये जायें, यह विधि अधिक कार आमद है कि पहले आसान वाक्यों से शुरू किया जाये जिन के अर्थ बच्चा समझता है और जिन्हें वह खुद बोलता है और फिर सोपानवार उन्हें तोड़कर शब्दों और आवाज से वाकिफ कराया जाये, लेकिन सिर्फ यही काफी नहीं है। किसी चीज को साफ तौर पर समझने के लिये न सिर्फ उस के विश्लेषण का ज्ञान होना ज़रूरी है बल्कि उन अंशों (पार्ट्स) को एक जगह जमा कर के पूरे रूप में देखना भी ज़रूरी है ताकि उनके पारस्परिक सम्बन्ध और क्रम साफ दिखने लगे। अर्थात सामान्यतः होना यह चाहिये कि पढ़ाने की यह प्रक्रिया विश्लेषण (एनालीसिस) से शुरू किया जाये और समामिश्रण (तरकीब) पर खत्म किया जाये। अतएवं पढ़ना सिखाने में वाक्यों को शब्दों और आवजों में तोड़ने के बाद सम्मिश्रण की प्रक्रिया भी करना चाहिये अर्थात् आवाज़ों को जोड़ कर शब्द बनाना और शब्दों को एकजा कर के वाक्य बनाना ज़रूरी है। सिर्फ इसी तरह ज्ञान पुख्तः हो सकता है।

5. तार्किक विधि पर मनोवैज्ञानिक क्रम को प्राथमिकता दें

जिस प्रकार ऊपर कुछ गुर बताये गये हैं उसी प्रकार एक और गुर पेश किया जायेगा, लेकिन यह प्रक्रियात्मक शब्दावली में जाहिर किया गया है। सिद्धान्त यह है। तार्किक तरतीब के बजाय मनोवैज्ञानिक तरतीब पर अमल दरआमद होना चाहिये। इस का अर्थ यह है कि पढ़ाने में हमें बच्चे के मानसिक विकास के नियमों का ध्यान रखना ज्यादा ज़रूरी है, विषय की विधिवत तरतीब के मुकाबले में जो प्रारम्भिक सिद्धान्तों से शुरू होती है। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या मनोवैज्ञानिक और तार्किक तरतीबें अनिवार्यतः एक दूसरे के विरोधी हैं? वास्तव में ऐसा नहीं है। कोई भी तार्किक तरतीब मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी बिल्कुल दुरूस्त हो सकती हे। अगर बच्चा मानसिक रूप से इस तरतीब को समझने की योग्यता रखता है। और इसी प्रकार एक मनोवैज्ञानिक तरतीब तार्किक हो सकती है यदि उस में एक सुव्यवस्था और उचित क्रमबद्धता पायी जाये। लेकिन याद रहे कि यह ज़रूरी नहीं है कि एक तरतीब मनोज्ञानिक तथा तार्किक दोनों लेहाज से दुरूस्त हो। मिसाल के तौर पर यद्यपि पढ़ना सिखाने की सस्वर विधि तार्किक ऐतबार से वैसी ही सही है जैसी कि कहानी की विधि लेकिन मनो वैज्ञानिक ऐतबार से कहानी के तरीकः को सस्वर विधि पर प्राथमिकता प्राप्त है। गणित में "सामान्य भिन्न" के पाठों में आमतौर पर यह तरतीब रखी जाती है ¼,½,¾ अर्थात छोटी भिन्न से शुरू कर के बड़ी भिन्न पर पहुंचते हैं। यह तार्किक तरतीब है। इस में प्रौढ़ दिमाग को ध्यान में रखा गया है। वह इस क्रमबद्धता में चीजों को आसानी से समझ सकता है यह तार्किक तरतीब है लेकिन यदि हम बच्चों की बुद्धि को सामने रखें तो यह तरतीब इस तरह होनी चाहिये पहले ½ फिर ¼ और अन्त में ¾; इस लिये कि बच्चा जो पहले से पूरी चीज से वाकिफ़ होता है उस के बाद उसके लिये आधा अर्थात ½ समझना ज़्यादा आसान है ¼ के मुकाबले में। फिर वह आधे का आधा अर्थात ¼ समझ सकता है इसलिये यह मनोविज्ञानिक तरतीब है। अतः शिक्षण में हमें विषय वस्तु की सुव्यवस्था के बजाय बच्चे के मानसिक विकास को ध्यान में रखना चाहिये।

उपरोक्त सिद्धान्तों का भावार्थ समझ लेने के बाद टीचर इन्हें अपने दैनिक कार्य में लाभप्रद ढंग से प्रयोग कर सकता है।

जारी.....

❑❑

बेपरदगी और हमारा समाज

– अताउल्लाह सिद्दीकी

हया मोमिन बन्दों की खास सिफत है, हया और ईमान दोनो लाजिम व मलजूम हैं। बेपरदगी और उसके लवाजिम और दवाओ सब के सब अहले कुफ्र की देखा–देखी नाम निहाद मुसलमानों के माहोल में रिवाज पा गये हैं। जो लोग बे परदगी को रिवाज देने की कोशिश में हैं और अपनी बहू, बेटियों को यूरोपिएन औरतों की तरह बेहया और बेशर्म बना चुके हैं। मादर पदर आजाद खयाल और आजाद लिबास, उन में बहुत से तो ऐसे हैं जो सिर्फ नाम के मुसलमान हैं और हया व शर्म के साथ ईमान की दौलत भी खो चुके हैं। और बहुत से लोग ऐसे हैं जो किसी दरजे में इसलाम से चिपके हुए हैं मगर उन को तकलीदे यूरोप का मिजाज और बे हयाई और बेशर्मी की तबीयत आहिस्ता–आहिस्ता इसलाम से हटाती जा रही है। अल्लाह के रसूल स0 ने जो फरमाया कि "हया और ईमान दोनो साथी है एक उठाया जाता है तो दूसरा भी उठा लिया जाता है।" यह इरशाद बिल्कुल हक है तजरिबा इसकी गवाही दे रहा है–

पवित्र कुर्आन में अल्लाह तआला ने कई जगह परदे का सख्ती से हुक्म दिया है अल्लाह का इरशाद है –

"ऐ नबी! अपनी पत्नियो और बेटियों, और ईमान वाली औरतो से कह दीजिए, "अपने ऊपर अपनी चादरें डाल लिया करें। इससे इस बात की जियादा उम्मीद है कि पहचान ली जाएं और सताई न जाएं, और अल्लाह बड़ा माफ करने वाला, रहम वाला है।"

(सूर–ए–अहजाब–आयत : 59).

इस आयत के कुछ ही पहले सहाबा को हुक्म दिया गया कि अगर उम्महातुल मोमिनीन से कुछ तलब करो तो पर्दे की आड़ से तलब करो। मरदों और आरतों को हुक्म दिया गया है कि परदा करो हदीस में इस को आँखो का जिना कहा गया है। अजनबी औरतों के हुस्न और उन की जीनत से लज्जत अन्दोज होना मरदों के लिए और अजनबी औरतो को मरदों से नजर मिलाना फितने का सबब है, फसाद की इब्तिदा यहीं से होती है पवित्र कुर्आन में परदे का जो हुक्म है उस के मुतअल्लिक उलमाए इस्लाम की दो राय हैं उलमा का एक हल्का आयात व हदीस को सामने रखते हुए औरत के जिस्म के तमाम हिस्सों का परदा लाजमी करार देता है और दूसरा हलका जरूरत के वक्त चेहरे और हाथ के परदे की रिआयत का कायल है लेकिन फसादे जमाना की बिना पर असबाबे फितना की रोक थाम के लिए मुख को छिपाना जरूरी करार देते हैं।

लेकिन रंगीन निगाह जो कुछ देखेगी, उसी रंग में देखेगी जो रंग उसपर चढ़ा हुआ है आज नज़र उठा के देखा जाए तो मुआशरे का हाल बिल्कुल बदल चुका है। औरतें कपड़ा तो पहन्ती हैं लेकिन नग्न नज़र आती हैं अर्थात इस कदर बारीक कपड़े पहनती हैं कि इस के पहन्ने से जिस्म छिपाने का फाइदा हासिल नहीं होता या कपड़ा बारीक तो न होगा लेकिन चुस्त होने और बदन की साख्त पर कस जाने से उस का पहन्ना न पहन्ना बराबर होता है। गैर इस्लामी तहजीब आंधी तूफान की तरह छाती जा रही है। यूरोपिएन कल्चर हमारे मुआशरे में पूरी तरह से हावी हो चुका है।

बेहयायी और बेपरदगी की जिन बातों के खयाल से भी कुछ साल पहले तक आपके रौगटे खड़े हो जाते थे अब बिल्कुल आम हो चुके हैं। बच्चे टी0वी0 अखबारों, पत्रिकाओं, विज्ञापनों, मुबाइल, इण्टरनेट में नंगी तसवीरें रोज देखते हैं और बेहयायी के आदी होते जा रहे हैं। बहुत ही गन्दे गीत घरो, गलियों, बाजारों यहाँ तक की

मुबाइल में बजरहे हैं किसी के कान इन गन्दे गीतों से महफूज नहीं हैं ऊँची सोसाइटी की औरतें कम लिबासों के साथ सरे आम घूम रहीं हैं निगाहें इन लिबासों की इतनी आदी हो चुकी हैं। कि कोई इसमें किसी तरह की बेहयायी महसूस नहीं करता। जहाँ शादी जैसे पाक रिशते को एक तरह की पुरानी रस्म समझा जा रहा है वहीं नाजायज तरीके से मरदों औरतों के मेल–जोल को पसन्द किया जा रहा है जहाँ तलाक को एक खेल समझते हैं, वहीं नस्ल बढ़ाने को बेवकूफी, जहाँ शौहर के हुक्म को एक तरह की गुलामी, वहीं Girl Freind, Boy freind को एक खयाली जन्नत समझा जा रहा है। आँखें नीची रखने का वुजूद खत्म हो चुका है एलानिया आँख और जबान का जिना किया जा रहा है। मुसलमान औरतें भी जीनत के जाहिर करने और हुस्न की नुमाइश करने में इज्जत समझती हैं औरते ऐसा लिबास पहन रही हैं जो अपने मर्दो के अलावा किसी के सामने नहीं पहनना चाहिये। औरतें औरतों की महफिल में, मर्द मर्दो की महफिल में बदकारी के हालात बयान करने में शर्म महसूस नहीं करते, मुसलामन औरते सिर्फ मुसलमानो ही के नहीं बल्कि गैरों के भी नाजायज इस्तेमाल में आ रही हैं।

वह औरतें जो अपने आप को माडर्न मानती हैं या माडर्न बनने की कोशिश करती हैं और माडर्न दुनया में रहती है चाहे वह फिल्मी दुनया हो, ग्लेमर्स की दुनया हो या माडलिंग की दुनया हो मुआशरे की वह औरते जो अपने आप को स्मार्ट समझती हैं या बनने की कोशिश करती हैं यह माडर्न मुआशरा उन से यह उम्मीद रखता है कि उन की खूबसूरती, उन की कशिश, उन का आजाद होना, आजाद होकर एक दूसरे से बातें करना चाहे वह अजनबी हो या रिश्ते का कोई गैर महरम हो या स्कूल, कालेज या मुहल्ले के दोस्त हों, उन से ओपेन होने में अपने आप को स्मार्ट, माडर्न स्टैन्डर्ड समझती हैं लेकिन हकीकत यह है कि वह जिसमानी एअतबार से सिर्फ और सिर्फ मरदों की तफरीह का सामान बन जाती हैं जब कि उस के बर अक्स जब एक औरत अपने आप को ढ़ाँप लेती है तो उसे छिपाने का सीधा मतलब यह होता है कि वह जिसमानी तौर पर लोगों की तफरीह का सामान बनने से इनकार कर रही है और हर आदमी यह सोचने पर मजबूर हो जाता है कि वह इस्लाम के उसूल पर चलने वाली, शरीअत पर अमल करने वाली एक सच्ची मुसलमान है और ये बेशर्म व माडर्न दुनया में कदम रखने को तय्यार नहीं उस सब के दरमियान एक हिजाब (नकाब) पहनने वाली औरत या लड़की मुआशरे में कदम रखती है तो उन दोनों बाजारों और मरदों के तफरीह का सामान बनने से खुद को रोकती है और अपने अन्दर की हया शर्म का एहसास दिलाती है तो मुआशरे में लोग उसे इज्जत व एहतराम की निगाह से देखते है और लोगों में औरत या लड़की के लिए इज्जत व एहतराम का जजबा पैदा होता है।

यह अजीब बात है कि जो लोग मुसलमान घर में पैदा होते है उन को इस्लाम विरासत में मिला है सिर्फ दिखावे के मुसलमान हैं हम ने इसलाम का बगैर मुताला किये उस की अच्छाइयों व बुराइयों को ध्यान दिये बिना इस लिए कुबूल कर लिया क्योंकि हमारे बाप दादा मुसलमान थे इस लिए हम भी मुसलमान हैं इस का नतीजा यह हुआ कि हमारी रूह (आत्मा) इस्लाम से खाली हो गई हमारे अन्दर अल्लाह का खौफ खत्म हो गया है जहन्नम के अजाब का यकीन खत्म हो गया और हमारे आम घरों की औरतों ने दिखाने के लिए नकाब को अपना लिया उस को इबादत समझ कर कुबूल नहीं किया माडर्न दुनया की चकाचौन्ध इस कदर उन पर हावी है कि उन को जहाँ भी और जब भी मौका मिलता है झटपट नकाब को उतार कर अपने आप को हल्का महसूस करने लगती हैं।

शेष पृष्ठ 12

? आपके प्रश्नों के उत्तर ?

मुफ़्ती मु० ज़फ़र आलम नदवी

प्रश्न : वह सफर कितना लंबा है, जिसमें रमजान में वक्ती तौर पर रोजा न रखने की इजाजत हासिल होती है और जिसमें नमाज में क़स्र किया जा सकता है?

उत्तर : हनफ़िया का मसलक तो यही है कि मुसाफिर होने के लिए कोई निश्चित जमीनी तय नहीं है, बल्कि औसत गति से तीन दिन और रात में जितनी दूरी तय हो सके कम से कम उतनी दूरी तय करने के बाद आदमी शरई तौर पर मुसाफिर होता है और उसके लिए नमाज में क़स्र करने और रमजान में वक्ती तौर पर रोजा न रखने की इजाजत होती है। आसान और मुश्किल रास्ते के अनुसार यह दूरी विचित्र भी हो सकती है।

लोगों की आसानी के लिए बाद के फ़क़ीहों ने दूरी का भी निर्धारण कर दिया है। इस संबंध में आलिमों की रायों में मतभेद है। अलग–अलग आलिमों ने 45 मील, 48 मील, 54 मील और 63 मील का निर्धारण किया है।

इमाम बुख़ारी ने इस संबंध में दो सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि0 के अमल को हवाले के तौर पर पेश किया है। ये दोनों हज़रात 4 बरीद के सफर पर क़स्र करते थे। एक बरीद चार फ़रसख यानी 12 मील का होता है। इस प्रकार 4 बरीद की कुल दूरी 48 मील हुई।

यह राय दो बड़े सहाबा के अमल पर आधारित है और यह तीन इमामों के मसलक के अनुसार भी है। इसलिए इस जमाने में भारत–पाकिस्तान के अधिकतर आलिमों ने इसे ही अपनाया है।

यह बात भी ध्यान में रखने की है कि एक फ़रसख़ तीन मील के बराबर होता है और यहाँ पर शरई मील का बात की जा रही है अंग्रेजी मील की नहीं। एक शरई मील 2 हज़ार गज़ के बराबर होता है। 2 हज़ार गज़ 1 किलोमीटर 828 मीटर और 80 सेंटीमीटर के बराबर होता है। इस प्रकार 48 मील 87 किलोमीटर 782 मीटर और 40 सेंटीमीटर के बराबर हुआ। यही शरई सफ़र की सर्वमान्य दूरी है।

अगर एक आदमी किसी जगह से दूसरी जगह आता है और वहाँ जाने के दो रास्ते हैं। जैसे ट्रेन का रास्ता और बस का रास्ता और दोनों रास्तों की दूरियाँ अलग–अलग है। एक रास्ते के अनुसार वह शरई सफ़र हो जाता है जबकि दूसरे रास्ते से नहीं। तो उस रास्ते पर विश्वास किया जाएगा जिस रास्ते से उस आदमी ने सफर किया है अगर वह 87 किलोमीटर 782 मीटर और 40 सेंटीमीटर या उससे ज़्यादा हो तो नमाज़ में क़स्र करें और रमज़ान के रोज़ों में भी अगर चाहे तो रुख़सत लें और बाद में उनकी गिनती पूरी करें।

प्रश्न : आजकल शहरों में आमतौर पर मस्जिदों के अन्दर सुबह और शाम बच्चों को तालीम दी जाती है, बल्कि कुछ मदरसों में मस्जिदों को ही इस्तेमाल किया जाता है। ऐसे में तालीम देने वाले मजदूरी लेकर बच्चों को तालीम देते हैं। सवाल यह है कि ऐसा करना जायज़ है या नहीं?

उत्तर : सबसे पहली बात तो यह कि पुराने आलिमे दीन खुद दीनी तालीम पर उजरत लेने को नाजायज़ समझते हैं। इमाम अबू हनीफ़ा का मसलक भी यही है। मगर बाद के फ़क़ीहों ने दीनी तालीम के महत्व और उसकी जरूरत को देखते हुए इसकी इजाजत दे दी है। इसी तरह मस्जिदों में भी उजरत लेकर तालीम देने को फ़क़ीहों ने गलत ठहराया है, इसलिए कि मस्जिदें इबादत व अल्लाह को याद करने की जगहें हैं आमदनी कमाने की नहीं मगर हमारे जमाने की माँग है कि इसकी इजाजत दी जाए, इसलिए कि आमतौर से संसाधनों

की कमी और दूसरी जगह की प्राप्ति की समस्या होती है। इस मामले में अगर सख़्ती से काम लिया गया तो यह बड़े नुकसान की बात होगी और यह शरई मस्लिहत के ख़िलाफ़ भी होगा कि स्कूलों के छात्र जो इस तरह सुबह और शाम थोड़े समय में दीन की बुनियादी तालीम हासिल कर लेते हैं वे उससे भी वंचित हो जाएंगे। ऐसे मदरसों का बन्द होना उस क्षेत्र के लोगों के लिए दीनी तालीम से वंचित होने का कारण बनेगा।

फिक्ह की किताबों में इसकी गुंजाइश है – "बच्चों को उजरत लेकर तालीम देने वाला टीचर जब गर्मी के कारण या किसी और मजबूरी से मस्जिद में बैठकर तालीम दे तो यह मकरूह नहीं।"

यहाँ गर्मी के अलावा किसी और जरूरत के लिए भी इसकी इजाजत दी गयी है। जाहिर है कि इससे बड़ी जरूरत और क्या होगी कि दूसरी कोई जगह उपलब्ध नहीं है। यह सिलसिला भी अगर बन्द कर दिया जाए तो तालीम का काम भी रुक जाएगा। हाँ अगर कोई दूसरी जगह मौजूद हो तो मस्जिद के बजाय वहीं तालीम दी जानी चाहिए।

(जदीद फिक्ही मसाइल : 1 से)

प्रश्न : मस्जिद के नीचे दुकानों का निर्माण करना कैसा है?

उत्तर : आजकल अधिकतर मस्जिदों के नीचे दुकानों का निर्माण कर दिया जाता है, जिनसे प्राप्त आमदनी से मस्जिद के खर्चे पूरे किये जाते हैं। ऐसा करना जायज है। ऐसी स्थिति में यह निचली मंजिल "मस्जिद" नहीं बल्कि एक ऐसी इमारत समझी जाएगी जिसे मस्जिद के मकसद से वक्फ़ कर दियागया है और ऊपर वाली मंजिल से मस्जिद का शुमार होगा।

मगर ऐसा तभी होगा, जब मस्जिद के निर्माण के समय से ऐसी नीयत कर ली जाए। अगर पहले किसी जमीन पर मस्जिद का निर्माण कर लिया और बाद में उसे तहखाना बना दिया गया तो यह जायज नहीं है।

प्रश्न : मस्जिद में चन्दों का एलान करना कैसा है?

उत्तर : मस्जिद में दीनी इदारों और कामों के लिए एलान करने में कोई हर्ज नहीं। अल्लाह के रसूल (सल्ल0) ने कई जंगी मुहिमों में माली सहयोग के लिए मस्जिदे नबवी में एलान फरमाया है। लेकिन किसी को निजी जरूरत के लिए ऐसा एलान नहीं करना चाहिए, क्योंकि अल्लाह के रसूल (सल्ल0) ने मस्जिदों में किसी खोयी हुई चीज के एलान को बहुत नापसन्द किया है।

यही हुक्म किताबों और कैलेंडर के एलान का होना चाहिए। अगर किसी दीनी इदारे ने इनको प्रकाशित किया है और उन तक भी उसका लाभ पहुंचता है, तो मस्जिदों में इसका एलान किया जा सकता है। अगर व्यक्तिगत रूप में किताबें प्रकाशित की गयी हैं और उनके लाभ व हानि का संबंध स्वयं उस व्यक्ति से है तो उसका एलान मस्जिदों में नहीं होना चाहिए।

प्रश्न : क्या एक मस्जिद से कुरआन दूसरी मस्जिद में ले जाया जा सकता है?

उत्तर : शहरों में आजकल अक्सर ऐसा होता है कि कुछ बड़ी और महत्वपूर्ण मस्जिदों में लोग बड़ी संख्या में कुरआन और उसके पारे लाकर रखते हैं, जो जरूरत से ज्यादा होते हैं, जबकि दूसरी मस्जिदों में विशेषकर गांवों और कस्बों की मस्जिदों में उसकी जरूरत होती है।

दीन के मजमूई मिजाज और फिक्ही तसरीहात से मालूम होता है कि ऐसा हालत में उन बड़ी मस्जिदों से कुरआन को छोटी, जरूरतमंद मस्जिदों तक ले जाने में कोई हर्ज नहीं है।

"अगर दीनी किताबें मस्जिद पर वक्फ़ कर दें तो जायज है और वह उसमें पढ़ी जाएंगी और वह उसी मस्जिद के लिए खास नहीं होगी। इससे मालूम हो गया कि वक्फ़ की किताबें अपनी जगह से स्थानांत्रित भी की जा सकती हैं।"

(दूर्रे मुख़्तार)

प्रश्न : मस्जिद में गैर–मुस्लिमों का चन्दा कुबूल करना ठीक है या नहीं?

उत्तर : मस्जिद में गैर–मुस्लिमों के चंदा के बारे में उलमा की रायें भिन्न हैं। कुछ उलमा ने मस्जिद की तामीर और उसकी मरम्मत में गैर–मुस्लिमों का चन्दा कुबूल करने से मना किया है। यहां तक कि गैर–मुस्लिम अगर किसी मस्जिद के निर्माण की वसीयत भी कर जाए तो उसकी वसीयत कुबूल नहीं होगी।

लेकिन कुछ दूसरे उलमा ने इसकी अनुमति दी है कि अगर गैर–मुस्लिम भी अपने अकीदे के अनुसार सवाब का काम समझता हो।

लेकिन गैर–मुस्लिमों से दीनी कामों के लिए चन्दा लेने में जहां तक हो सके बचना चाहिए। अगर किसी कारणवश उससे चंदा लेना ही पड़े तो यह ध्यान रखना जरूरी है कि वह अपने अकीदे के मुताबिक उसे सवाब का काम समझता हो उसने किसी राजनीतिक या सामाजिक स्वार्थ के आधार पर यह चन्दा न दिया हो। यह आशंका भी नहीं हो कि आगे चलकर वह अपने त्योहारों के लिए या मंदिर निर्माण के लिए चंदा मांगेगा।

जहां तक सरकरी सहयोग का मामला है तो यह अलग है, इसलिए कि लोकतांत्रिक देशों में सरकार केवल गैर–मुस्लिमों की ही नहीं होती बल्कि उसमें मुसलमान भी शामिल होते हैं।

(ज़दीद फिक्ही मसाईल)

❑❑

दिमाग़ी वरज़िश

– इदारा

जिस रोज़ पहली जनवरी एक्तिस दिसम्बर दिन वही
पर साल वो हो जिस में हो अट्ठाइस दिन की फ़रवरी

साले कबीसा छोड़ कर है फ़रवरी बीस आठ की
यह बात पक्की जान लो ये है किताबों में लिखी

पस हर कबीसा साल में जिस दिन को होगी जनवरी
अगले दिन इक्तिस दिसम्बर आगे अगली जनवरी

जो सन है बटता चार पर वह है कबीसा याद रख
फ़रवरी उन्तीस की उस सन में होगी याद रख

सदयों को इन से कर अलग उन का अलग है ज़ाब्ता
फ़रवरी अट्ठाइस उन में जान ले बे वास्ता

जो सदी तक्सीम होगी चार सौ पर बे बचत
फ़रवरी उन्तीस दिन की उस में लिख तू बे ग़लत

जून नवम्बर जानये अप्रैल सितम्बर तीस दिन
फ़रवरी अट्ठाइस दिन की और सब इक्तीस दिन

फ़रवरी झगड़ी बहुत पर उस का जजमेन्ट हो गया
बाक़ी हैं ग्यारह महीने ज़िक्र उन का फिर किया

अप्रैल सितम्बर जून नवम्बर उन के तो हैं तीस दिन
सात बाक़ी जो रहे उन सब के हैं इक्तीस दिन

88

सत्य घोषणा

डॉ हारून रशीद सिद्दीकी

शिक्षा है इस्लाम की
पूजा बस भगवान की

कहते हैं हम उसको अल्ला
दोष रहित है वह तो वल्ला

नाम हैं उसके अच्छे–अच्छे
नतमस्तक सब उसको होते

कोई उसे परमेश्वर कहता
और कोई है ईश्वर कहता

नाम गाड है कोई रखता
श्रीअकाला है कोई कहता

जो चाहो तुम नाम उसे दो
है आवश्यक दोष रहित हो

पूज्य न उसके गैर को मानो
बात है सच्ची दिल से जानो

भेजे दूत हजारों उसने
परिचय रब का दिया है सबने

अन्तिम दूत मुहम्मद आये
रब का प्रेम सन्देशा लाये

सृष्टि में वो हैं सबसे उत्तम
सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम

उन्होंने ने आदर सबको सिखाया
एक पूज्य है हमें बताया

माने पूज्य जो उसके अतिरिक्त
रहे सदा फिर नरक में दण्डित

ईश शरण हम उससे मांगें
शिर्क पाप से दूर ही भागें

दृष्टि प्रेम की डालें सब पर
ईश कृपा हम मांगे सब पर

इसी अर्थ में करो सलाम
मानव को ना करो प्रणाम

सृष्टि में सबसे बड़े मुहम्मद
उन पर भी हम मांगे रहमत

कअ़बा जो है क़िब्ला हमारा
उसको भी सज्दा नहीं गवारा

रब्बे कअ़बा पूज्य हमारा
उसी को सज्दा होता हमारा

माता पिता से प्रेम हैं करते
देश पे अपने हम हैं मरते

मन से सब का आदर करते
नहीं हम उनके आगे झुकते

देश की रक्षा करने ख़ातिर
सर हैं देने को हम हाज़िर

पूज्य तो हम बस ईश को कहते
पूज्य देश को कह नहीं सकते

पूज्य नहीं हैं मुहम्मद प्यारे
जो हैं सृष्टि में सबसे न्यारे

मक्का मदीना प्रिय हैं हम को
पूज्य नहीं हम कहते उनको

देश की धरती हम को प्यारी
पूज्य नहीं पर वो है हमारी

आग में हम जल जाएंगे
पूज्य उसे न बनाएंगे

बेशक वो है हमारी माता
पर वो नहीं हमारी दाता

उस पे हमारी जान निछावर
पर वो नहीं हमारी दावर

प्यारे वतन के प्यारे निवासी
इसी वतन के हम भी बासी

नहीं प्रेम में कमी हमारे
जब चाहो तुम परखो प्यारे

जब बाडर पर वक़्त पड़ेगा
बुरी नज़र से शत्रु बढ़ेगा

लेकर हम बन्दूक़ और भाले
रहेंगे तुम से सुन लो आगे

देश का कण कण हम को प्यारा
पर वो नही है पूज्य हमारा

प्रिय है हम को देश हमारा
पर ईमान है उस से प्यारा

ईश के अतिरिक्त पूज्य नहीं है
सुन लो बस ईमान यही है

मानें पूज्य जो उसके अतिरिक्त
जलेंसदा हम नरक में दण्डित

मौत वहां नहीं आए गी
दण्डित को तड़पाए गी

शरण ईश की मांगो उससे
बात यही हम कहेंगे सबसे

प्राण देश पर करेंगे क़ुर्बा
पर ना देंगे हरगिज ईमां

ईश हमारी मदद करेगा
कृपा अपनी हम पे करेगा

आबे ज़मज़म

- इदारा

मअना

ज़मज़म के मअ़ना "बहुत पानी" के है। ग़ालिबन पानी की कसरत (अधिकता) की वजह से ही यह कुंआ ज़मज़म कहलाता है इस कुंए के पानी को कोई आबे ज़मज़म तो कोई ज़म ज़म कहता है। अ़रबी ज़बान में बाधने के मअ़ना भी आते हैं। जब क़ुदरते ख़ुदावन्दी से यह चश्मा (स्रोत) फूटा और पानी फैलने लगा तो हाजिरा ने चारों तरफ़ से मिट्टी से घेर कर पानी के बहाव को बान्ध दिया। कुछ ह़ज़रात का ख़याल है कि इसी निसबत से यह कुंआ ज़मज़म कहलाया। (वल्लाहु अअ़लम)

ज़मज़म का पीना मसनून व मुसतह़ब है। ख़ुद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ह़िज्जतुल विदाअ़ के मौकिअ़ पर ख़ुसूसी एहतिमाम से नोश फ़रमाया (पिया) एक रिवायत में है "ज़मज़म जिस मक़सद से पिया जाए वह मक़सद ह़ासिल होगा।" (यअ़नी किसी बीमारी को दूर करने की ग़रज़ से पिया जाए तो वह बीमारी दूर होगी।) (नसई)

आप ने जब ज़मज़म नोश फ़रमाया आप का सरे मुबारक खुला हुआ था और आप ख़ुद खड़े थे (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) इस लिये बअ़ज़ ह़ज़रात ने ज़मज़म पीते वक़्त इस कैफ़ीयत को मसनून करार दिया है। (तह़तावी अ़ला मराक़िल फ़लाह)

मुह़क़्क़िक़ीन का ख़याल है कि सर खुला होना इह़राम की वजह से था और खड़ा होना कीचड़ की वजह से इस लिये यह एक तबई फ़िअ़ल (कर्म) था, इस का इहतिमाम करना सुन्नत नहीं। वाक़िआ़ (वास्तविकता) यह है कि ह़िज्जतुल विदाअ़ के वाक़िअ़े (घटना) की तफ़सील से ऐसा ही मअ़लूम होता है, फिर भी चूंकि तबई उमूर में भी आप का इत्तिबाअ़ मुसतह़ब के सवाब से कम नहीं इस लिये ख़याल होता है कि ज़मज़म पीते वक्त इस का ख़याल कर लेना बेहतर है यअ़नी ज़मज़म खड़े होकर पिये, नीज़ टोपी उतार कर पियें। 'वल्लाहु अअ़लम। (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)

इब्नि माजा ने मुह़म्मद बिन अ़ब्दिर्रह़मान बिन अबी बक्र रज़ि0 से ज़मज़म पीने के आदाब की बात नक्ल की है कि : मैं ह़ज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास के पास बैठा हुआ था कि एक शख़्स आया, आप रज़ि0 ने उससे पूछा, कहाँ से आए हो? अ़र्ज़ किया "ज़मज़म से, दरयाफ्त किया जिस तरह ज़मज़म पीना चाहिये उसी तरह पिया है? नव वारिद ने पूछा किस तरह? फ़रमाया : जब ज़मज़म पियो तो क़िबला रुख हो जाओ, अल्लाह का नाम लो, तीन साँस में पियो और खूब सेर होकर (पेट भर कर) जब फारिग हो तो अल्लाह की ह़म्द करो। इब्नि कुदामा ने ज़मज़म पीने के बअ़द यह दुआ लिखी है :

बिस्मिल्लाहि, अल्लाहुम्मज्-अलहु लना इल्मन्नाफिअ़न् व रिज़क़न् वासिअ़न व रीयन व शबअ़न् व शिफ़ाअन् मिन् कुल्लि दाइन वग्सिल बिही कल्बी वम्लअहु मिन् हिक्मतिक् (अलमुग़नी)

अल्लाह के नाम से, इलाही इस को हमारे लिये इल्मे नाफ़िअ़, रिज़्क़ वासिअ़, सेराबी व आसूदगी, और बीमारी से शिफा का ज़रीआ़ बना इस से मेरे क़ल्ब को धो दे और ह़िकमत से भर दे।

बअ़ज़ अहले इल्म ने नकल किया है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ख़ुद भी ज़मज़म ले जाते थे और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मरीज़ों पर भी यह पानी छिड़कते थे। ह़ज़रत ह़सन, व ह़ुसैन रज़ि0 की तह़नीक (पैदा होने वाले बच्चे के लाइक़ कोई खाने वाली मुनासिब चीज़ मुंह में चबा कर बच्चे के मुंह में रखना) भी आबे ज़मज़म से फ़रमाई रद्दुल मुह़तार।

इमाम तिर्मिज़ी ने ह़ज़रत आइशा से ख़ास तौर पर आबे ज़मज़म सफ़रे ह़ज्ज में मदीने ले जाने का जिक्र किया है। (तिर्मिजी)

आबे ज़मज़म से गुस्ल

आबे ज़मज़म से गुस्ल व वुज़ू

भी किया जा सकता है।

(अलकामूसुल मुहति)

इब्नि कुदामा ने लिखा है कि पानी का मज्द व शरफ़ उस के इस्तिअ्माल में कराहत नहीं समझी जाती थी। (अलमुग़नी) अलबत्ता माउ ज़मज़म से इस्तिन्जा करना या जिस्म या कपड़े पर लगी हक़ीक़ी नजासत को ज़मज़म से साफ़ करना मकरूह है। (मुअ्जमुल बुलदान)

ज़मज़म की तारीख़ पर एक नज़र

यह मुबारक कुंआ अल्लाह की क़ुदरत से उस वक्त वजूद में आया जब इब्राहीम (अलैस्सिलाम) ने रब्बानी मंशा के मुताबिक़, हज़रत हाजिरा और उनके बतन से होने वाले फ़रज़न्द हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलम) जो अभी दूध पीते थे उनको मक्के की बे आब व ग्याह वादी में जो छोड़ा थोड़ी सी ग़िज़ा और कुछ पानी हज़रत हाजिरा के साथ था। जब यह ग़िज़ा और पानी ख़त्म हो गया तो दूध आना बन्द हो गया हज़रत हाजिरा क़रीब की दो पहाड़ियों सफ़ा और मरवा पर चढ़ीं, और एक पहाड़ी से दूसरी पहाड़ी तक बे ताबाना दौड़तीं कि कहीं पानी नज़र आ जाए या कोई क़ाफ़िला गुज़रता हुआ देखने में आए, जिस से शायद पानी मिल सके। हज़रत हाजिरा की यह बेक़रारी अल्लाह की बारगाहे रहमत में मक़बूल हुई और ख़ुश्क पहाड़ों के दरमियान उस संगलाख़ (पथरीली) वादी में ज़मज़म का चशमा (स्रोत फूट पड़ा। बअ्ज़ रिवायात से मअ्लूम होता है कि यह चशमा आप की एड़ियों के नीचे से फूटा था। (मुअ्जमुल बुलदान) बअ्ज़ से मअ्लूम होता है कि हज़रत जिब्रील ने यहाँ अपने पाँव मारे थे। (इब्नि हिशाम) इस तरह की बअ्ज़ और रिवायतें भी हैं।

अरब के रेगज़ार में किसी जगह पर पानी का वजूद बहुत बड़ी निअ्मत थी, चुनांचि इस पानी की कशिश ने बनू जर्हम के क़ाफ़िले को जो मक्का के क़रीब से गुज़र रहा था और जिस ने मक्का पर मंडलाते परिन्दों को देख कर वहाँ पानी के वजूद का अन्दाज़ा किया था, इस बात पर राग़िब किया कि वह मक्के में इक़ामत पिज़ीर हो जाएं (निवास कर ले) हज़रत हाजिरा की इजाज़त से यह क़बीला मक्के में मुक़ीम हो गया और इसी क़बीले में हज़रत इस्माईल (अ0) का निकाह हुआ। (अलबिदायह व न्निहायह) एक अर्से (समय) बअ्द हज़रत इस्माईल की औलाद जो बनू बक्र कहलाए और बनू जुर्हम के दरमियान इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया यहाँ तक कि बनू बक्र ने बनू जुर्हम को मक्के से निकाल बाहर किया।

बनू जुर्हम ने जाते हुए अज राहे शरारत उस कुंए को पाट दिया और धीरे–धीरे लोगों को उस कुएं का खयाल भी जाता रहा। हज़ारों साल के बअ्द पैग़म्बरे इस्लाम जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दादा हज़रत मुत्तलिब ने कई दिनों तक एक ख़्वाब देखा जिस में दोबारा इस कुंए को खोदने की बशारत थी, चुनांचि अ्ब्दुल मुत्तलिब और उनके साहिब जादे हारिस ने मिल कर उस जगह को खोदना शुरूअ किया यहाँ तक कि यह कुआँ जो अ़र्से से पटा हुआ था दोबारा लोगों को फ़ैज़ याब करने लगा। (इब्नि हिशाम) यह गोया इस बात की अलामत थी कि मक्के से अनक़रीब (जल्द ही) हिदायते रब्बानी का चशम–ए–हैवाँ जारी होने वाला है। शिहाबुद्दीन याक़ूत हमवी ने लिखा है कि कुंए में तीन तरफ से चशमा जारी है, एक हजरे असवद की तरफ़ से, दूसरा जबले अबू क़ुबैस और सफ़ा की तरफ़ से और तीसरा मरवा की तरफ से और यह चशमा ऊपर से नीचे की जानिब साठ हाथ तक फैला हुआ है। (मुअ्जमुल् बुलदान) जादल्लाहु फ़ी शरफ़िहा व मजदिहा।

❑❑

भारत का संक्षिप्त इतिहास...

इतना ही नहीं, अकबर जैसे प्रतिभावान तथा महत्वाकांक्षी बादशाह को अधिक दिनों तक अपने संरक्षण तथा नियन्त्रण में रखना भी बैरम खाँ के लिए सम्भव न था। अतएवं अन्ततोगत्वा शक्ति के लिए सम्राट् तथा संरक्षक में संघर्ष होना अनिवार्य था, परन्तु प्रारम्भ में बैरम खाँ की सेवाएं सम्राट के लिए बड़ी लाभदायक सिद्ध हुई और अपनी कठिनाइयाँ दूर करने में उसे बड़ी सहायता मिली।

❑❑

समाज-सुधार

सैलानी की डायरी
देश को ऐसे अफसर चाहियें

मो० हसन अन्सारी

सैलानी के एक शिष्य ओ0एन0जी0सी0 (आयल ऐण्ड निचुरल गैस कमीशन) देहरादून में वरिष्ठ इंजीनियर हैं, आज सुबह के समय मिलने आ गये। लखनऊ में सैलानी के निवास स्थल पर। उम्र कोई पचास साल से ऊपर। मार्निंग वाक में निकले थे। कोई तीस साल बाद मुलाकात हुई। चुस्त–दुरूस्त, सेहत मन्द। सूरत और आसाम में बरसों तैनात रहे। बताने लगे आसाम से देहरादून आया तो पाया कि कर्मचारी देर से दफ्तर आते हैं। यह साहब आज भी दफ्तर साइकिल से जाते हैं। मां–बाप ने बचपन में ऐसी शिक्षा–दीक्षा दी कि समय–पालन उन की पहचान; एहसास ज़िम्मेदारी उनकी शान। दो चार दिन तो ऐसे गुजरे कि आप दफ्तर पहुंचे तो ताला बन्द मिला, फिर झाड़ू लगाने वाला आया, और ग्यारह–बारह बजे तक मातहत स्टाफ़। दूसरे हफ्ते ही दफ्तर की एक चाभी अपने पास रखी। ठीक दस बजे दफ्तर पहुंचे, दफ्तर खोला, झाड़न से मेज़ कुर्सी साफ की और काम करना शुरू कर दिया। अबजब स्वीपर आया, बाबू लोग आये तो देखा कि साहब तो अपनी सीट पर बैठे काम कर रहे हैं। पानी–पानी हो गये। और एक हफ्ते बाद सभी कर्मचारी समय से दफ्तर आने लगे। और शाम को समय से दफ्तर बन्द, सब लोग समय से अपने–अपने घर। आज का काम आज निस्तारित। मेजों पर फाइलों का ढेर नहीं। काम के समय काम, आराम के समय आराम। अनावश्यक विलम्ब, खैंच–तान, जवाब तल्बी, झूठ, बहाने बाजी नींद चैन सब गायब होने का दौर खत्म, चैन की बंसी। ऐसे ही वर्क कलचर की जरूरत है हमारे महान भारत को। चलते समय बताया कि एक गुर्दे पर चल रहे हैं, दूसरा निकाला जा चुका है। दोनों गुर्दे काम कर रहे होते तो क्या हाल होता मिस्टर जावेद का, सैलानी ने सोचा।

ऐसे होती थी पढ़ाई

2, नवम्बर 2009। आज सैलानी की मुलाकात हनफी इण्टर कॉलेज रसूलाबाद, सुल्तानपुर के चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी श्री0 मेवालाल से हुई। मेवालाल की उम्र 52 वर्ष है। उन्होंने बताया कि कॉलेज के संस्थापक हाफिज़ रमजान अली (सैलानी के बड़े भाई) जिन्हें उस इलाके में लोग 'हाफिज़जी' के उपनाम से जानते हैं, ने उन्हें दर्जा 6,7 में पढ़ाया है। मेवालाल ने बताया कि 'हाफिज़जी' हम विद्यार्थियों को इम्तेहान करीब आने पर बताते थे कि जब परीक्षा भवन में पर्चा मिले तो सबसे पहले पढ़ना। (मेवालाल ने कुरआन की सूरः ताहा की 25वीं और 26 वीं आयत पढ़कर सुनायी जिसका अर्थ है "ऐ मेरे परवरदिगार मेरा सीना खोल दे और मेरे काम को मेरे लिए आसान बना") मेवालाल ने बताया कि करीब के छात्रों को शाम को निःशुल्क पढ़ाते थे जिसमें अधिकांश मुस्लिम बच्चे होते। पिछला पढ़ाया हुआ 'हाफिज़जी' बच्चों से सुनते और जब याद किया हुआ वह न सुना पाते तो 'हाफिज़जी' मुझसे सुनाने को कहते और मैं कुर्आन की यह आयतें फर्राटे के साथ सुना देता। मेवालाल ने 'हाफिज़जी' के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उन्हें बच्चों को खूब शिक्षा दिलाने की प्रेरणा 'हाफिज़जी' से मिली है। मुल्क को आज ऐसे बहुत से 'हाफिज़जी' की जरूरत है।

"आज कितने टीचर्स अपने छात्रों को निःशुल्क पढ़ाते होंगे? पढ़ाई का यह अनोखा ढंग अपनाते होंगे? और जहां वे पढ़ाते होंगे उस इलाके के कितनों के दिल में उनके लिए आदर और सम्मान होगा? और कितने दिन यह सम्मान बाकी रहता होगा?" सैलानी ने सोचा। मेवालाल कोई 42 साल के बाद यह घटना सुना रहे थे और आज भी उनके दिल में 'हाफिज़जी' के लिए अपार सम्मान है। बाकी रहने वाली चीज़ इन्सान के आमाल (सतकर्म) हैं। और एक टीचर के लिए तो उसके स्टूडेन्टस आजीवन अपने टीचर्स की जो छाप उनपर पड़ी है उसे समाज में बिखेरते रहते हैं। मेवालाल के चार बेटे हैं सब पढ़े लिखे हैं एक बेटा एम0ए0 कर रहा है, धन्य हैं ऐसे लोग।

शेष पृष्ठ 36

भारत का संक्षिप्त इतिहास

मुगल काल

पिछले अंक से आगे.....

— इदारा

अकबर का प्रारम्भिक जीवन

अकबर का पूरा नाम जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर था। उसके पिता का नाम हुमायूँ और उसकी माता का नाम हमीदा बानू बेगम था। जिस समय हुमायूँ शेरशाह से परास्त होकर अपने भाई हिन्दाल के साथ सिन्ध में भ्रमण कर रहा था उसी समय हिन्दाल के शिक्षक की रूपवती कन्या हमीदा बानू बेगम के साथ उसका प्रेम हो गया और उसने 21 अगस्त 1541 ई0 को उसके साथ अपना विवाह कर लिया। हिन्दाल को यह बात अच्छी न लगी और वह हुमायूँ का साथ छोड़ कर कन्दहार चला गया। अब हुमायूँ हमीदा बानू बेगम के साथ घूमता हुआ 22 अगस्त 1542 ई0 को अमरकोट पहुंचा। यहीं पर राजा बीरसल के राजभवन में 15 अक्टूबर 1542 ई0 को हमीदा बानू बेगम के उदर से अकबर का जन्म हुआ। अब पुत्र के पैदा होने की सूचना हुमायूँ को मिली तो उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। परन्तु इस समय अपने मित्रों को भेंट देने के लिए एक कस्तूरी के अतिरिक्त और कुछ न था। फलतः उसने कस्तूरी को तोड़ कर अपने मित्रों में बाँट दिया और भगवान से प्रार्थना की कि जिस प्रकार कस्तूरी की सुगन्धि चारों और फैल रही है, उसी प्रकार उसके पुत्र का भी यश दिग्दिगन्तों में फैल जाय। हुमायूँ के मित्रों ने भी बालक को यशस्वी होने का आशीर्वाद दिया जो आगे चल कर फलीभूत हुआ।

जब हुमायूँ ने फारस के शाह के यहाँ जाने को निश्चय किया तब उसने अकबर को कन्दहार में अपने कुछ शुभचिन्ताकों के संरक्षण में छोड़ दिया और अपनी पत्नी हमीदा बानू बेगम के साथ फारस के लिए प्रस्थान कर दिया। इस समय अकबर की अवस्था केवल एक वर्ष की थी। इस प्रकार अकबर अत्यन्त बाल्यकाल में ही अपने माता के वात्सल्य से वंचित हो गया। इस समय मिर्जा अस्करी कन्दहार ही में था। वह अकबर को अपने पास ले गया। उसकी पत्नी सुल्ताना बेगम के अपनी कोई सन्तान न थी। अतएवं उसने बड़ी सावधानी तथा स्नेह के साथ अकबर का पालन–पोषण आरम्भ कर दिया। 1545 ई0 की शौत–ऋतु में अकबर कन्दहार से काबुल भेज दिया गया जहाँ पर कामरान शासन कर रहा था। इस प्रकार अकबर अपने चाचा कामरान के संरक्षण में आ गया। काबुल में बाबर की बहिन खानजादा बेगम उन दिनों विद्यमान थी। उसने बड़े ही लाड–प्यार के साथ अकबर का पालन–पोषण किया। इस प्रकार अकबर के जीवन के प्रथम तीन वर्ष व्यतीत हुए।

नवम्बर, 1545 ई0 में जब हुमायूँ ने काबुल पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया तब अकबर को अपने माता–पिता के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ परन्तु 1546 ई0 की वसन्त–ऋतु में हुमायूँ ने बदख्शाँ के लिए प्रस्थान कर दिया। इस बीच में कामरान ने काबुल पर फिर अपना अधिकार स्थापित कर लिया और एक बार फिर अकबर अपने निर्दयी चाचा के हाथ पड़ गया। अब हुमायूँ बदख्शाँ से वापस लौटा और काबुल के दुर्ग का घेरा डालकर उस पर गोले बरसाना आरम्भ किया तब कामरान ने हुमायूँ तथा उसके अनुयायियों की स्त्रियों तथा बच्चों के साथ बड़ा दुर्व्यवहार किया। उसने बच्चों को दुर्ग की दीवारों स लटकवा दिया। इन्हीं बच्चों में अकबर भी था। सौभाग्य से हुमायूँ के आदमियों ने अकबर को पहचान लिया और तोपों का मुंह फेर दिया जिससे बच्चे की जान बच गई। यह घटना अप्रैल 1547 ई0 की है। इसके बाद अकबर सदैव अपने पिता हुमायूँ के साथ रहा। 1551 ई0 में अकबर का हिन्दाल की पुत्री रजिया सुल्ताना के साथ विवाह हो गया। चूंकि हिन्दाल को मृत्यु हो चुकी थी, अतएंव उसका प्रान्त गजनी अकबर को मिल गया।

जब हुमायूँ ने भारत की

पुनर्विजय आरम्भ की तब अकबर उसके साथ था। 1555 ई0 में जब हुमायूँ ने लाहौर पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया तब उसने अकबर को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। इस वर्ष हुमायूँ ने अकबर को पंजाब का गवर्नर बना दिया और बैरम खाँ को उसका संरक्षक बना दिया।

सरहिन्द के युद्ध में अकबर अपने पिता हुमायूँ के साथ अफगानों से युद्ध कर रहा था और सेना के एक अंग का संचालन कर रहा था। सरहिन्द की विजय के उपरान्त जब सिकन्दर लोदी शिवालिक की पहाड़ियों की ओर भाग गया तब हुमायूँ ने अकबर तथा बैरम खाँ को उसका दमन करने के लिए पंजाब भेज दिया और स्वयं दिल्ली चला गया। परन्तु बादशाह बहुत दिनों तक जीवित न रहा। 20 जनवरी, 1556 ई0 को उसकी अकाल मृत्यु हो गई। मुगलों को इस दुर्घटना से ऐसा लगा कि उनके ऊपर गाज गिर पड़ी है। बादशाह की मृत्यु की सूचना तुरन्त अकबर तथा बैरम खाँ के पास भेज दी गई। अकबर इस समय पंजाब से गुरदासपुर जिले में कालानूर नामक स्थान पर था। बैरम खाँ ने तुरन्त वहीं पर एक चबूतरे को सिंहासन बनाकर अकबर को उसी पर 14 फरवरी 1556 ई0 को बिठा दिया और वहाँ पर उपस्थित अफसरों तथा अमीरों से उसका अभिनन्दन कराया। चूंकि उस समय अकबर की अवस्था केवल तेरह वर्ष चार महीने थी, अतएवं शासन की बागड़ोर बैरम खाँ ने अपने हाथ में ले ली।

अकबर की प्रारम्भिक कठिनाइयाँ

अकबर की प्राम्भिक कठिनाईयों पर प्रकाश डालते हुए स्मिथ महोदय ने लिखा है– "जब कालानूर में समारोह किया गया तब यह नहीं कहा जा सकता था कि उसके पास कोई साम्राज्य था। बैरम खाँ कि सेनापतित्व में जो छोटी–सी सेना थी उसका पंजाब के कुछ जिलों में संकटपूर्ण अधिकार शक्ति द्वारा स्थापित था और उस सेना पर पूर्ण विश्वास भी नहीं किया जा सकता था। नाम में और सच्चे अर्थ में बादशाह बनने के पूर्व अकबर को यह सिद्ध कर देना था कि वह अपने प्रतिद्वन्द्वियों से, जो अपने को सिंहासन के अधिकारी समझते थे, श्रेष्ठतर था और उसे अपने पिता के खोये साम्राज्य को पुनः प्राप्त करना था। यद्यपि कालानूर में अकबर का राज्याभिषेक कर दिया गया था परन्तु वास्तव में न तो उसके पास कोई सिंहासन था और न साम्राज्य वरन् इन दोनों के लिए उसे संघर्ष करना था। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसे निम्नलिखित कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था :–

1. साधनों का अभाव

सिंहासन तथा साम्राज्य के प्राप्त करने के उसके साधन बड़े संकीर्ण थे। अभी वह पंजाब में था। न उसके पास कोई सुसंगठित तथा सुव्यवस्थित सेना थी और न उसके पास इस प्रकार की सेना के संगठित करने के साधन थे। बाबर तथा हुमायूँ की आर्थिक दुर्नीति के कारण खजाना खाली हो गया था। जो कुछ साधन थे भी, उनका सदुपयोग करना कठिन हो गया था, क्योंकि इन दिनों दिल्ली तथा आगरे में भयंकर अकाल पड़ गया था। चूंकि पश्चिमोत्तर प्रदेश पर अकबर का अपना अधिकार न था, अतएवं उस ओर से भी सैनिकों का मिलना कठिन था।

2. सरदारों में मतभेद

अकबर की दूसरी समस्या यह थी कि उसके सरदारों में बड़ा मतभेद था। कुछ सरदारों की यह राय थी कि पहले अकबर को काबुल ले जाया जाय और वहाँ पर एक सुसंगठित तथा सुसज्जित सेना का संगठन करके तब अफगानों का सामना किया जाय। अन्य सरदारों की यह राय थी कि सीधे दिल्ली की ओर प्रस्थान कर दिया जाय और अफगानों का सामना किया जाय।

3. काबुल की समस्या

अकबर को सिंहासन पर बैठे अभी तीन ही चार दिन हुए थे कि उसके सामने तीसरी समस्या आ खड़ी हुई। उसे यह सूचना मिली कि बदख्शाँ के शासक सुलेमान मिर्जा ने एक बड़ी सेना के साथ काबुल का घेरा डाल दिया है। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक था कि काबुल की रक्षा के लिए एक सेना को तुरन्त भेज दिया जाय, अन्यथा उसका हाथ से निकल जाना निश्चित था।

परन्तु मुगल सेना इतनी बड़ी न थी कि उसका कुछ भी भाग काबुल की रक्षा के लिए भेजा जाता, क्योंकि ऐसा करने से भारत का जो भाग अकबर के अधिकार में था, वह भी खतरे में पड़ जाता।

4. अफगानों की समस्या

काबुल की समस्या पर विचार हो ही रहा था कि चौथी समस्या आ खड़ी हुई। दिल्ली के गवर्नर तार्दी बेग ने यह सूचना भेजी कि मुहम्मदशाह आदिल के सेनापति हेमू ने आगरे पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया है और दिल्ली की ओर बढ़ता चला आ रहा है और यदि समय से पर्याप्त सेना दिल्ली न पहुंच गई तो उसकी रक्षा करना कठिन हो जायगा। ऐसी स्थिति में मुगल सेना कर्तव्यविमूढ़–सी हो रही थी, क्योंकि यह निश्चित था कि यदि सेना के प्रधान अंग को दिल्ली या काबुल भेज दिया जाय तो सिकन्दरशाह सूरी शिवालिक की पहाड़ियों से निकल कर पंजाब को रौंदना आरम्भ कर देगा।

5. अल्पायु की समस्या

उपर्युक्त समस्याओं का सामना करने की अकबर में क्षमता न थी क्योंकि अभी उसकी अवस्था बहुत कम थी और उसे किसी भी प्रकार का सैनिक तथा प्रशासकीय अनुभव न था। न वह स्वयं अपने प्रबल शत्रुओं से लोहा ले सकता था और न अपने राज्य में शान्ति तथा सुव्यवस्था स्थापित कर सकता था। परन्तु सौभाग्य से उसे अपने योग्य तथा अनुभवी संरक्षक बैरम खाँ की सेवाएं प्राप्त थीं, जिस पर उस समय बादशाह का अटल विश्वास था। फलतः बैरम खाँ साम्राज्य का वकील तथा खानखाना अर्थात् प्रधान मंत्री बन गया। परिस्थितियाँ बैरम खाँ के अनुकूल थीं। वह न केवल बादशाह का संरक्षक था वरन् मुगल–अमीरों में वह सबसे अधिक प्रभावशाली भी था। उसकी स्वामिभक्ति पर किसी भी प्रकार का सन्देह नहीं किया जा सकता था, क्योंकि हुमायूँ के संकट–काल में उसने सदैव उसका साथ दिया था। उसमें अपने पद के उपयुक्त सभी योग्यताएं विद्यमान थीं। वह उच्चकोटि का विद्वान्, सभ्य, व्यवहार–कुशल तथा नीति–निपुण व्यक्ति था। वह बड़ा ही वीर तथा कुशल सेनानायक था। अतएवं अल्पायु के कारण अकबर में जो अभाव था, उसकी पूर्ति उसके संरक्षक ने कर दी।

6. संरक्षक की समस्या

परन्तु बैरम खाँ स्वयं अकबर के लिए एक समस्या बन गया। बैरम खाँ मूलतः फारस का निवासी और शिया–सम्प्रदाय का अनुयायी था। मुगल दरबार के बहुत से अमीर उससे अधिक वयोवृद्ध थे, जो सुन्नी–सम्प्रदाय के अनुयायी थे और अपने को शुद्ध तुर्की रक्त का मानते थे। यह बड़े स्वामिभानी थे और इन सुन्नी वयोवृद्ध अमीरों को नियन्त्रण में रखना बैरम खाँ के लिए भी सरल काम न था।

शेष पृष्ठ 32

सैलानी की डायरी

पुरूषार्थ : 9 नवम्बर 2009

मिश्रा जी भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में तकनीकी अधिकारी के पद पर कार्यरत कर्मचारी हैं। लखनऊ में तैनात हैं। लखनऊ में संस्थान 1952 में स्थापित हुआ और मिश्रा जी यहां 1984 में अये। आज प्रातः मिश्रा जी से मुलाकात हुई। चाय पर बताने लगे, बेल्थरा रोड़, बलिया से कोई पचीस साल पहले यहां नौकरी में आया था, तब यहां जंगल था। रिंग रोड पर गफूर मियां की जमीन थी, बारह बिस्वा के करीब। उन दिनों अब से कोई पचीस साल पहले बीस हजार में गफूर मियां से एक बिस्वा जमीन ली। वह कहते थे कि सब ले लो। मेरे पास सब के लिये पैसा न था। नौकरी करता, अपनी कुटिया बनाई, रहने लगा। फिर थोड़ी पूंजी से छोटा मोटा कारोबार शुरू किया। मालिक ने बरकत दी। फायदा हुआ। अब सात बिस्वा जमीन है। करोड़ों की सम्पत्ति। पांच छः साल रिटायर होने को हैं। मोरंग बालू का ठेका लेते हैं, वही मोरंग बालू संस्थान में किसी निर्माण कार्य के लिये गिर रहा है, सुबह वही देखने आ गये थे।

आदमी में पुरूषार्थ हो, आशावान हो, परिश्रमी और ईमानदार हो तो तरक्की करेगा, खुश रहेगा। लोगों की प्रसन्नता बिखेरेगा। सन्तोष की दौलत से मालामाल होगा। जीवन को सार्थक बनायेगा, जायेगा तो अपने पीछे अच्छे और नेक कामों की धरोहर छोड़ जायेगा। और धरोहर उसकी जो इस नेक नियती और समझदारी से धनी। मैं इन विचारों में, मिश्रा जी से मुलाकात के बाद, डूब गया।

❑❑

पहली किस्त

स्वतंत्रा संग्राम में नदवतुलउलमा से जुड़े लोगों की भूमिका

अनुवाद – हबीबुल्लाह आज़मी

अब्दुल वकील नदवी

नदवतुल उलमा आन्दोलन

स्वतंत्रा आन्दोलन के एक और प्रेमी जिन्हें इतिहास ने मौलाना मुफ़ती इनायत अहमद काकोरवी के नाम से याद रखा है 9 शव्वाल 1228 हि0 को देवाँ, जिला बाराबंकी में पैदा हुए। फ़िक़ह (धर्मशास्त्र) में निपुण होने के कारण आप अलीगढ़ विश्वविद्यालय में मुफती मुंसिफ के पद पर पदासीन (फाईज) हुए। देश पर अंग्रेजों के दोबारा सत्ता अस्थापित करने के बाद आप देश विद्रोह के जुर्म में गिरिफ्तार करके इंडमान भेजे गये और जेल में पढ़ाने का काम सम्पन्न करते रहे। बहुत से पत्रिकाएं लिखीं। रामपुर जिला के आस पास आप की सरगर्मियों का केन्द्र था। प्रसिद्ध अरबी पुस्तक "तकवीमुल बुलदान" का अनुवाद कर के फलस्वरुप आपको रिहाई मिली।

रिहाई के बाद आपने कानपूर में मदरसा फैज आम काइम किया जिस के यश (फैज) से नदवतुल उलमा के आन्दोलन की स्थापना हुई। नदवतुल उलमा की स्थापना के प्रारम्भिक काल में आप कई जलसों में शरीक रहे। मौलाना अहमद रजा खाँ बरेलवी ने आप की बड़ी प्रशंसा की है। कुछ बहुमुल्य पुस्तकों के लेखक ने 52 वर्ष की उम्र पाई। 6 शव्वाल 1280 हिज0 को जद्दा के निकट जहाज टकराने के कारण एहराम की हालत में शहीद हुए। मोमिन का उद्देश्य न मालो–दौलत है न मुल्क फतह करना "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन"

अल्लामा शिबली का स्वतंत्रा आन्दोलन में सहयोग लेखों व शाएरी के माध्यम से

अल्लामा शिबली एक सच्चे मुसलमान थे। इस लिए उन के दिल में भी देश की स्वतंत्रा का दीप पूरी तरह रौशन था। आप एक उच्चकोटि के इतिहासकार और आलोचक होने के कारण स्टेज और लीडरों की पार्टीबन्दी से कोसों दूर रहे लेकिन अल्लाह तआला ने जो महारत दी थी उस के द्वारा उन्होंने देश की स्वतंत्रा के लिए जो सेवाएं की वह भुलाई नहीं जा सकती।

अल्लामा ने अपनी नज़्म (पद्य) और लेखों के द्वारा आजादी का जो दीप जलाया वह प्रशंसायोग तथा गौरववान है क्यों कि 1914 ई0 में आप की एक नज़्म के कारण गिरिफ्तारी वारन्ट भी जारी हुआ जिस पर कार्यवाही नहीं हुई लेकिन आजादी के जियालों में एक नाम अल्लामा शिबली का भी स्वतंत्रा संग्राम सेनानियों की सूची में उच्च स्थान पर दर्ज है।

शिबली वह व्यक्ति थे जिन्होंने सबसे पहले राजनीतिक मामिलों में भाग लिया और कांग्रेस के पक्ष और समर्थन में आवाज उठाई और किसी ऐसे समझौते पर तैयार न हुए जो हिन्दुस्तान की गुलामी और गफलत को काइम रखने में मददगार साबित हो।

आप की बुद्धिमानी (जेहनी फिरासत) ने जहाँ दारुल उलूम नदवतुल उलमा की शिक्षा प्रणाली (निजामे तालीम) को उच्चस्तर पर पहुंचाने के लिए शिक्षा सलाहकार के पद पर पहुंचाया उसी बुद्धिममता ने आप को राजनीत में दिलचस्पी लेने के लिए प्रेरित किया। यही वजह है कि आप ने मुसलमानों में अधिकार की माँग का जजबा पैदा किया और चापलूसी की राजनीति से दूर रखा और उन्होंने हिन्दू–मुस्लिम एक्ता का प्रचार प्रसार किया और संयुक्त कौमियत और विशाल देश वासी होने की चेतना पैदा की। इस के अतिरिक्त अपनी नज्मों (पद्यों) और शाएरी के द्वारा अंग्रेज. दुश्मनी को बढ़ावा दिया।

अल्लामा अपने बारे में खुद लिखते हैं कि राजनीतिक राय में मैं हमेशा आजाद रहा और सरसय्यद के साथ सोलह साल रहा लेकिन राजनीतिक मामलों में हमेशा उन का विरोधी रहा और कांग्रेस को पसंद करता रहा इसके अतिरिक्त मुस्लिमगजट का निकलना भी अल्लामा के प्रस्ताव और उनकी

देख–रेख में उन्नति करता रहा जब कि बंगाल के विभाजन की अस्वीकृति, बलकान युद्ध, मुस्लिम यूनीवर्सिटी की माँग, कानपुर मस्जिद की घटना और मुस्लिम लीग का सुधार, मुसलमानों में सही राजनीति में दिलचस्पी पैदा करने की कोशिश और लेखों आदि के द्वारा राजनीतिक रुख को सही दिशा देना, मुस्लमानों को उनकी अस्लीयत बाकी रखने के लिए खुदामुद्दीन जैसी संस्था की स्थापना भी मौलाना के राजनीतिक का एक महत्वपूर्ण रोल है। कहने का अर्थ यह है कि मौलाना का मिजाज एक अनिवेषक (मुहकिक), जीवनी लेखक का था। इसलिए वह स्टेज के हंगामों से काफी दूर रहे लेकिन अपने योग्य जो सेवा हो सकती थी उस को पूरा किया और ऐसे लोग तैयार किये जो देश को दुश्मनों से आजाद करने की उच्चक्षमता के योग्य बने और साथ–साथ इस्लाम और मुसलमानों के काज को सही दिशा पर ला सके। मौलाना अबुल कलाम आजाद, मौलाना सैय्यद सुलैमान नदवी, मौलाना मसऊद अली नदवी, मौलाना अब्दुल माजिद दरयाबादी मौलाना अब्दुस्सलाम जैसे तीन चार नाम ही उन की सफलता का प्रमाण है जिन्हों ने देश को विचार, सभयता हर हैसियत से आजाद कराने में विशेष भूमिका अदा की।

नदवतुल उलमा के सलाहकार अल्लामा शिबली का जन्म 1857 के प्रथम स्वतंत्रा संग्राम के जमाने में बिन्दवल जिला आजमगढ़ में हुआ जब कि आप का देहान्त 1914 में उस समय हुआ जब आप की गिरिफ्तारी का वारन्ट जारी हो चुका था लेकिन इस के पहले कि आप को कैद की मुसीबतों को झेलना पड़ता अल्लाह तआला ने अपना मेहमान बना लिया।

"किये थे हमने भी कुछ काम
जो कुछ कि हम से बन आए।"

स्वतंत्रा संग्राम सेनानी मुहम्मद अली जौहर और नदवतुल उलमा

मौलाना मुहम्मद अली जौहर ख़िलाफत आन्दोलन के संस्थापक, हिन्दुस्तान की आजादी के सक्रीय कार्यकर्ता और अल्लामा शिबली द्वारा प्रशिक्षित टोली के सदस्य थे। मौलाना के कौमी और देश सेना का इतिहास साक्षी है। मौलाना का नदवतुल उलमा से जो गहरा सम्बन्ध था वह किसी से कम नहीं। मोलाना ज़ियाउद्दीन इस्लाही अपने लेख "मौलाना मुहम्मद अली जौहर और मौलाना शिबली नोमानी (जौहर नम्बर) में प्रकाशित हो चुका है लिखते हैं मौलाना नवदी, मौलाना मसऊद अली नदवी से भी मौलाना मुहम्मद अली जौहर के गहरे सम्बन्ध थे और उन लोगों से उनके बराबर पत्रव्यवहार रहते थे और जब मौलाना शौकत अली किन्दवाड़ा में नज़रबन्द थे तो उसी जमाने में नदवतुल उलमा का वार्षिक अधिवेशन नाग पुर में हुआ तो मौलाना जौहर के गोपनीय दूत ने अल्लामा सैय्यद सुलैमान नदवी, मौलाना मसऊद अली को किन्दवाड़ा आने की दावत दी जो कि अगरचे खतरे से खाली नहीं था फिर भी छुप छुपा कर उन से मिलने गये। मौलाना का दारुल मुसन्निफीन से भी गहरा सम्बन्ध था और नदवा की विचार धारा से मौलाना बहुत प्रभावित थे। मौलाना अब्दुलमाजिद दरयाबादी मुहम्मद अली की जाती डाइरी के "चन्दवरक" में एक घटना का उल्लेख करते हैं कि जब दोनों भाई रिहाई के बाद किन्दवाड़ा से रेलगाड़ी द्वारा लखनऊ से गुजरे तो मौलाना अब्दुल बारी फिरंगी महली उन से मिलने स्टेशन गये तो एक भीड़ भी आप से मिलने के लिए स्टेशन पर मौजूद थी। उस में बड़ी संख्या दारुल उलूम नदवतुल उलमा के विद्यार्थियों की थी। उस समय मौलाना जौहर ने कहा कि आप लोगों में से कोई सूरः यूसुफ की तिलावत करे। इससे मौलाना का सम्बन्ध नदवतुल उलमा से क्या था अनुमान लगाया जा सकता है और फिर यह वाक्य (जुमला) कि जेल से बाहर निकले तो सैय्यद सुलैमान नदवी से काम लेना है। यह सब इस सम्बन्ध तथा महब्बत प्रचायक (इज़हार) है जो उनको नदवतुल उलमा और वहाँ के विशिष्ट (मुमताज़) विद्वानों से था। नदवतुल उलमा कानपूर के अधिवेशन 1925 में मौलाना मुहम्मद अली जौहर, मौलाना अब्दुलमाजिद दरया बादी साथ–साथ बैठे नज़र आते हैं।

मौलाना का नदवा वालों से बहुत गहरा सम्बन्ध था। वह नदवा विचार–धारा के प्रथम सहयोगी व मददगारों में से थे क्यों कि

शेष पृष्ठ 19

किस्त 19

हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण तथा अर्थ

— इदारा

नोट : बिन्दी वाले अक्षरों के उच्चारण स्थान, उर्दू वालों से सीखना आवश्यक है।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
हैफ़	खेद	ख़ाशाक	तृण	ख़ाम	कच्चा
हीला	पाखन्ड	ख़ास	परमुख	ख़ाम ख़याली	भ्रांति
हीने हयात	आजीवन	ख़ास्सा	विशेषता	ख़ामोश	मूक
हैवान	पशु, जीवधारी	ख़ावर	शौहर	ख़ामोशी	मौनता
हैवानी	पाशविक	ख़ासीयत	गुण	ख़ामा	लेखनी.
हैवानीयत	पाशविकता	ख़ातिर जमअ़	संतोष	ख़ामी	दोष
ख़ातिम	समापक	ख़ातिर ख्वाह	इच्छानुसार	ख़ान्दान	परिवार
ख़ार दार	कंटक पूर्ण	ख़ातिर दारी	सत्कार	ख़ान्दानी	पैतृक
ख़ातिम	समापक	ख़ाती	दोशी	ख़ानसामा	रसोइया
ख़ातून*	महिला	ख़ाक	धूलि	ख़ानक़ाह	मठ
ख़ादिम	सेवक	ख़ाकसार	विनीत	ख़ानगी	निजी
ख़ार	शूल	ख़ाकसारी	विनय	ख़ानम	महिला
ख़ारदार	कंटकित	ख़ाकनाए	जल डमरू मध्य	ख़ानमां	ग्रह सामग्री
ख़ारिज	निष्कासित	ख़ाका	आलेख	ख़ानमां बार्बद	उदवासित
ख़ारिजा	बाह्य	ख़ाकी	पार्थिव	ख़ानवादा	कुल
ख़ारिजा पालीसी	पर राष्ट्रनीति	ख़ाल–ख़ाल	यदा–कदा	ख़ाना	घर
ख़ारिजी	बाह्य	ख़ालिस	निर्मल	ख़ानापुरी	कोष्ठक पूर्ति
ख़ारिश	खुजली	ख़ालिक़	जनक	ख़ाना तलाशी	गृहविचयन
ख़ाजिन	कोषाध्यक्ष	ख़ालिके कायनात	विश्वकर्मा	ख़ाना जंगी	गृहयुद्ध
ख़ास	विशेष	ख़ाली	शून्य	ख़ाना दारी	गृहव्यवस्था

पाठक जिस उर्दू शब्द का अर्थ जानना चाहेंगे अर्थ सहित छापा जायेगा।

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

– डॉ0 मुइद अशरफ नदवी

तालिबान के साथ वार्ता के लिए अमेरिका तैयार

बुडापेस्ट, (एजेसी)! अमेरिका के रक्षा मंत्री रॉबर्ट गेट्स ने कहा है कि यदि अफगानिस्तान देश में जारी हिंसा समाप्त कराने के लिए मध्यस्थता करे तो उनका देश आतंकवादी संगठन तालिबान से बातचीत कर सकता है।

गेट्स ने बुडापेस्ट में आयोजित उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के सदस्य देशों की पहले दिन की बैठक के बाद संवाददाताओं से कहा कि मेलमिलाप ही अफगानिस्तान में जारी हिंसा का राजनीतिक समाधान होगा। लेकिन यह मेलमिलाप वहां की सरकार की शर्तों के अनुसार होगा और तालिबान को वादा करना होगा कि वह सरकार का आधिपत्य स्वीकार करेगा। गेट्स ने साथ ही यह भी स्पष्ट किया कि इस राजनीतिक मेलमिलाप में अल कायदा से संबंधित कोई भी व्यक्ति शामिल नहीं होगा। बुश प्रशासन द्वारा पूरे विश्व में आतंकवाद के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान का मुख्य निशाना अलकायदा ही है।

जज ने टिप्पणी पर माफी मांगी

नई दिल्ली। मुस्लिम संगठनों द्वारा आलोचना का सामना कर रहे सुप्रीम कोर्ट के जज मार्कन्डेय काटजू ने अपनी विवादास्पद टिप्पणी के लिए माफी मांगी है। उनहोंने कहा था कि मुस्लिम छात्र दाढ़ी रखने की जिद नहीं कर सकते क्योंकि यह देश के तालिबानीकरण का मार्ग प्रशसत करेगा। न्यायमूर्ति आरवी रवीन्द्रन और मार्कन्डेय काटजू की पीठ ने गत 30 मार्च को उसके द्वारा पारित वह आदेश भी वापस ले लिया जिसमें उसने दाढ़ी रखने पर पाबंदी लगाने के बारे में मध्य प्रदेश के एक कांवेन्ट स्कूल के आदेश के खिलाफ दायर एक छात्र की अपील खारिज कर दी थी। पीठ ने कहा कि याचिका पर सुनवाई के दौरान हममें से एक (मार्कन्डेय काटजू) ने कुछ टिप्पणी की थी। उनका इरादा किसी को आहत करना नहीं था।

चीन में इजेक्शन से दी जाएगी संजा–ए–मौत

बीजिंग। आपराधिक न्याय प्रक्रिया को मानवीय बनाने के प्रयास में चीन उसमें बदलाव लाने की तैयारी में है। इसके तहत मौत की सजा पाने वाले अपराधियों को गोली मारने की बजाय अब इंजेक्शन से मौत की नींद सुला दिया जाएगा। रिसर्च ब्यूरो के महानिकदेशक हू यूनतेंग ने बताया, जिन देशों में मौत की सजा का प्रावधान है, वहां यह काम इंजेक्शन से किया जाता है। इसे अधिक मानवीय माना जाता है क्योंकि वह सजायाफ्ता के भय और दुर्द को गोली मार कर दी जाने वाली सजा की तुलना में कम है।

साठ साल से हमारा कर्जदार है पाक

भारत का 300 करोड़ रुपए उसके पास

नई दिल्ली। पाकिस्तान से भारत को अब भी बँटवारे के पहले के 300 करोड़ रुपए का कर्ज वसूलना है। यह कर्ज तब से जस का तस बना हुआ है। सरकारी बजट में इसे 'देनदारी' विषय के तहत दर्शाया जाता है।

बजट में इसका जिक्र 'पाकिस्तान पर बँटवारे के पूर्व के कर्ज की हिस्सेदारी की राशि' के रूप में किया गया है और राशि 300 करोड़ रुपए दिखाई जाती है। पाकिस्तान ने भले ही कर्ज की यह रकम अब तक न चुकाई हो लेकिन भारत ने बँटवारे के पूर्व के अपने 50 करोड़ रुपए के ऋण का भुगतान 1947 में ही कर दिया था। हैरत की बात यह है कि भारत ने इस रकम पर अपने खातों में ब्याज की दर नहीं जोड़ी है।

क्या कहते हैं आंकड़े

- भारत में हर दिन धूम्रपान से 2,200 लोग मरते हैं विश्व में 10,000।
- देश में कैंसर से मरने वाले 33 प्रतिशत लोग धूम्रपान से मरते हैं।
- धूम्रपान करने वाले 14 फीसदी लोगों में सांस संबंधी शिकायतें।
- भारत में धूम्रपान की शुरुआत उम्र 20।
- कैंसर की शिकार महिलाओं की उम्र तकरीबन 40–65 के बीच।

❑❑